अथवा

भूषण की कविता में वीररस का महत्त्व बताइए।

4. 'बालिका का परिचय' कविता की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। (10)

अथवा

'वर दे वीणावादिनी वर दे' कविता का सार लिखिए।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए: (5)

   (i) किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा का सामान्य परिचय

   (ii) ब्रज का सामान्य परिचय

   (ख) किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए: (5+5)

   (i) भारतेंदु-युग

   (ii) छायावाद

   (iii) सूफी काव्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2321 **H**

Unique Paper Code : 62051214

Name of the Paper : आधुनिक भारतीय भाषा : हिंदी भाषा और साहित्य (B)

Name of the Course : बी.ए. (प्रोग्राम) **Functional Hindi**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

   (क) यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान। (10)

   सीस दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥

अथवा

छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।

(ख) सटपटाति-सी ससिमुखी, मुख चूँघट-पट ढाँकि। (10)
पावक-झर-सी झमकि कै, गई झरोखे झाँकि।।

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद मद गैबरन के रलत है।
ऐल फैल खैल भैल, खलक में गैल-गैल,
गजन की रैल पैल, सैल उसलत है।
तारा सौ तरनि धूरिधारा में लगत जिमि
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।

(ग) प्रभु ईसा की क्षमाशीलता, (10)
नबी मुहम्मद का विश्वास।
जीव-दया जिनवर गौतम की,

आओ देखो इसके पास।
परिचय पूछ रहे हो मुझसे,
कैसे परिचय दूँ इसका।
वही जान सकता है इसको,
माता का दिल है जिसका।

अथवा

नवगति, नवलय, ताल-छंदनव
नवलकंठ, नवजलद-मन्दरवय
नव नभ के नवविहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!
वर दे, वीणावादिनि वर दे।

2. कबीर की काव्यभाषा का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए। (10)

अथवा

तुलसीदास का साहित्यिक परिचय लिखिए।

3. बिहारी की काव्यकला पर प्रकाश डालिए। (10)

तुलसीदास की समन्वयवादी भावना पर प्रकाश डालिए।

3. बिहारी की श्रृंगार भावना का निरूपण कीजिए। (15)

अथवा

'बीती विभावरी' का प्रतिपादय लिखिए।

4. 'जो बीत गयी सो बात गई' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। (15)

अथवा

नागार्जुन के कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) सूरदास की वात्सल्य भावना

(ii) हरिवंशराय बच्चन का साहित्यिक परिचय

(iii) 'रईसों के सपूत' कविता की मूल संवेदना

(iv) 'गीत फरोश' कविता का उद्देश्य

(2000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4961 **H**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunikkal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) सांई सूं सब होत है, बंदे थैं कछु नाहिं।
राई थैं परबत करै, परबत राई मांहि
माला पहरयां कुछ नहीं, गांठि हिरदा की खोई
हरि चरनूं चित्त राखिये, तौ अमरापुर होई

अथवा

मैया मैं नहीं माखन खायौ।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि, मेरै मुख लपटायो।
देखि तुहीं सीं कै पर भाजन, ऊँचे धरि लटकायो।
हौ जु कहत नान्हे कर आपनै मै कैसे करि पायो।।
मुख दधि पोछि, बुद्धि इक कीन्ही दोना, पीठि दरायों।

(ख) नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहि काल।
अली, कली ही सौ बंध्यो, आगे कौन हवाल
भूषन-भारु संभारिहै क्यों इहिं तन सुकुमार
सूधे पाई न घर परै सोभा हीं के भार।

अथवा

जी, माल देखिए दाम बताऊँगा
बेकाम नहीं है, काम बताऊंगा
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैने
यह गीत, सख्त सर-दर्द भुलाएगा
यह गीत पिया को पास बुलाएगा

(ग) जीवन में वह था एक कुसुम
थे, उसपर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी कितनी इनकी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
जो मुरझाई फिर कहाँ खिलीं

अथवा

लो यह लतिका भी भर लाई
मधु मुकुल नवल रस गागरी
अधरों में राग अमंद पिये,
अलकों में मलयज बंद किये -
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री।

2. कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

6. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(क) हिंदी का उद्भव

(ख) आधुनिक काल में हिंदी

(ग) संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

(घ) कृष्ण भक्ति काव्य

(ङ) प्रगतिवाद

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2320 **H**

Unique Paper Code : 62051213

Name of the Paper : Hindi – A

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Functional Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) कबीर इस संसार को, समझाऊं कै बार।

पूंछ जू पकड़ै भेड़ की, उतर् या चाहै पार।।

अथवा

मरतु प्यास पिंजरा - पर् यौ सुआ समै कैं फेर।

आदरु दैं दैं बालियतु बाइसु बलि की बेर॥

(ख) हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती-

अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़ - प्रतिज्ञ सोच लो,

प्रशस्त पुण्य पंथ है - बढ़े चलो - बढ़े चलो।

अथवा

उस पुण्य भूमि पर आज तपी !

रे! आन पड़ा संकट कराल,

व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे

डस रहे चतुर्दिक् विविध व्याल।

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

2. बिहारी अथवा जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

3. पाठ्यक्रम में निहित कबीर के दोहों का भाव स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

मीरा की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

4. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के काव्य सौंदर्य की विवेचना कीजिए। (10)

अथवा

'मेरे नगपति! मेरे विशाल!' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

5. निर्गुण भक्ति काव्य का सामान्य परिचय दीजिए। (10)

अथवा

द्विवेदीयुगीन कविता की विशेषताएं लिखिए।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (5)

(i) हिंदी की उत्पत्ति ।

(ii) आधुनिक भारतीय भाषाएं ।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (5+5=10)

(i) चारण काल

(ii) रामभक्ति

(iii) रीतिसिद्ध

(iv) प्रगतिवाद

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2324 H

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Paper : Hindi – B

Name of the Course : B.A. (Programme) Hindi CBCS

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं तीन अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय
सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय ।। (10)

अथवा

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोई करु जेहिं तव नाव न जाई।।
बेगी आनु जल पाय पखारु। होत बिलंबु उतारहि पारु।।
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।
सोई कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा।।

(ख) सटपटाति सैं ससिमुखी, मुख घूँघट-पटु ढाँकि। (10)
पावक झर सी झमकि कैं, गई झरोखा झाँकि।।

अथवा

आँखि ही मेरी पै चेरी भई लखि फेरी फिरै न सुजान की घेरी।
रूप-छकी तित की बिथकी, अब ऐसी अनेरी पत्याति न नेरी।
प्राण लै साथ परी पर-हाथ बिकानि की बानी पै कानि बखेरी।
पायनि पारि लई घनआनंद चायनि, बावरी प्रीति की बेरी।।

(ग) दीप-शिखा है अंधकार की (10)
घनी घटा की उजियाली।
उषा है यह कमल-भृङ्ग की
है पतझड़ की हरियाली।।

अथवा

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
मैं तोड़ती पत्थर।

2. कबीर के काव्य में मानवता के स्वरूप **अथवा** तुलसी के काव्य में लोकवादी रूप के दर्शन किस प्रकार होते हैं ? (10)

3. बिहारी रीतिसिद्ध कवि हैं **अथवा** धनानंद रीतिमुक्त कवि हैं स्पष्ट कीजिए। (10)

4. 'बालिका का परिचय' **अथवा** 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का सार लिखिए। (10)

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का सार लिखिए।।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) तुलसीदास का साहित्यिक परिचय

(ii) मैथिलीशरण गुप्त की कविता की विशेषताएं

(iii) 'बीती विभावरी जाग री' का कविता का सार

(iv) भवानी प्रसाद मिश्र का साहित्यिक परिचय

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4941 **H**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunikkal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (3×10=30)

(क) सिखवति चलन जसोदा मैया।
अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरे पैया।
कबहुँक सुंदर बदन विलोकित, उर आनंद भरि लेत बलैया।
कबहुँक कुल देवता मनावति, चिरजीवहु मेरौ कुँवर कन्हैया।
कबहुँक बल काँ टेरि बुलावति, इहि आँगन खेलौ दोउ भैया।
सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नँदरैया।

P.T.O.

अथवा

सारदूल को स्वाँग करि, कुकर की करतूति।
तुलसी तापर चाहिए, कीरति विजय विभूति
बहु मुख, बहु रुचि, बहु वचन, बहु अचार व्यवहार।
इनको भलो मनाइबो, यह अज्ञान अपार

(ख) फिरि-फिरि चितु उतहीं रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग छबि-झर मैं भयौ भौंर की नाव
जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँह।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि।

अथवा

अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये-
तू अब तक सोई है आली।
आंखों में भरे बिहाग री!

(ग) जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर;
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर!
-उनको प्रणाम!

अथवा

जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको;
पर बाद-बाद में अक्ल जगी मुझको,
जी लोगों ने तो बेच दिये ईमान,
जी, आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान-
मैं सोच-समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ
जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ

2. कबीर ने अपने दोहों में आडम्बर और अंधविश्वास का विरोध किया है, पाठ्यक्रम आधारित दोहों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सूरदास की कविता में कृष्ण लीला की विशेषताएं लिखिए। (15)

3. बिहारी की श्रृंगार - चेतना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'रईसों के सपूत' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'जो बीत गई सो बात गई' कविता की प्रासंगिकता पर विचार प्रकट कीजिए। (15)

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (7×2=14)

(i) भांड

(ii) सोहर-गीत

(iii) अवधी लोक कथा

(iv) पंडवानी

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5032 **H**

Unique Paper Code : 2052201202

Name of the Paper : हिंदी का मौखिक साहित्य और उसकी परंपरा

Name of the Course : **B.A. (Prog.): (DSC-4) NEP-UGCF**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (15×4=60)

1. मौखिक साहित्य की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसका सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

लोक साहित्य के विविध रूपों का परिचय दीजिए।

2. लोक गीत की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

सोहर लोक गीत का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. लोककथा का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

लोक गाथा आल्हा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. लोक नाट्य सांग का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

लोक नाट्य 'विदेशिया' की सामान्य विशेषताएँ बताइए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×2=16)

(क) खेतन में लागी कटनिया हो राम।

माथे क झूमर झलाझल झलके,

खनके कलइया कँगनवा हो राम।।

मिलि जुलि के सखिया लाही बँधवाओ।

भरै चलो घर की बखरिया हो राम।।

अथवा

इंद्र कै बात सुनिकै भगवान का संतोषु भा औ तब उइ जमराज ते बोले - महाराज! यो तम्हइँ गड़बड़घोटाला कीन हउ, अब तुम्हहीं येहका पव्यारौं। किरपा करिकै ई पापिन का फिर धरती माँ छांड़ि आव; काहे ते, पाप गंगा के नहाए ते नहीं, अच्छे करमन ते खतम ह्वात हैं।

किरपा करिकै अइस भूल न किहेंव।

(ख) करि के गइलन बलमुआँ निरासा।

गवना करा के सँइयाँ घरे छोंडि दिहलन,

गइलन बिदेस हमें करि के बेकासा।

सँइयाँ के सुख हम कुछुओ ना जनलीं,

बिचहीं बिधाता बितवलन तमासा।

अथवा

दिन लिकड़ा पीली पटी, चलणे की सुरती रटी।

ना डरते फिरते करते रहे, सैल बन की रै।।

जब बाहर शहर तै लिकड़े, लम्बे लम्बे दरखत खड़े।

जड़ै चन्दन के देखें बिड़े।

खशबोई होई खोई दुर्गन्धी तन की रै।।

3. सूरदास के पदों के आधार पर गोपियों की विरह भावना का मूल्यांकन कीजिये। (15)

अथवा

बिहारी के काव्य में चित्रित श्रृंगार चेतना को अपने शब्दों में लिखिए।

4. "भूषण रीतिकाल के वीर रस के कवि हैं" इस कथन की तर्क-संगत समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'घनानंद प्रेम की पीर के सच्चे साधक हैं' - इस कथन की पुष्टि कीजिए।

5. संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए (कोई दो) (2×9=18)

(क) सुन्दरकाण्ड का काव्यत्व

(ख) सूरदास के पदों का काव्य-सौन्दर्य

(ग) बिहारी के काव्य में सूक्ष्मता

(घ) केशवदास की 'रामचंद्रिका' में राम कथा वर्णन

(ङ) भूषण के नायक

(च) घनानंद की काव्य-भाषा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5142 **H**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता: सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **बी.ए. (विशेष) हिंदी : DSC**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (3×9=27)

(क) लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू।।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती।।
ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी।।
क्रोधिहिं सम कामिहि हरिकथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा।।

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ।।
सन्धानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ।।

अथवा

कौन हौ कित तें चले कित जात हौ केही काम जू ।
कौन की दुहिता बहू कहि कौन की यह बाम जू ।
एक गाँउ रहौकि साजन मित्र बन्धु बखानियै ।
देस के परदेस के किधौं पंथ की पहिचानियै ।

(ख) आए जोग सिखावन पाडे
परमारथी पुराननि लादे ज्यौं बनजारे तां ठाँड़े ।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखें तै राँड़े ।
कहौ मधुप, कैसे समायेंगे एक म्यान दो खाड़े ।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथिन के संग गाँड़े ।
काकी भूख गयी बयारि भखि बिना दूध घृत माँड़े ।
काहे जो झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डांड़े ।

अथवा

धाम धरीक निवारिये, कलित ललित अलि-पुंज ।
जमुना तीन तमाल-तरु-मिलित मालती-कुञ्ज ।।
मिली चन्दन-बेंदी रही गौरें मुंह, न लखाई ।
ज्यौं ज्यौं मद-लाली चढ़ै, त्यौं त्यौं उधरति जाइ ।।

(ग) मीत सुजान अनीति करौ जिन, हा हा न हूजिये मोहि अमोही ।
दीठि कौं और कहूं नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे रूप की दोही ।
एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान - बटोही ।
हौं घनानंद जीवन मूल दई ! कित प्यासनि मारत मोही ।

अथवा

राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो गाजत गयंद दिग्गजन हिय साल को ।
जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को ।
साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीन्हें भूषण भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को ।
आन रावराजा एक मन में न लाऊँ अब साहू को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को ।

2. 'रामचरित मानस' के सुन्दरकाण्ड की उपादेयता पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

केशव दास की 'रामचंद्रिका' में चित्रित वन गमन प्रसंग का सौन्दर्य वर्णन कीजिए ।

'अग्निपथ' कविता का भावार्थ लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5,5,5)

(i) आदिकालीन साहित्य

(ii) रासो काव्य की विशेषताएं

(iii) संत काव्य की प्रवृत्तियां

(iv) प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियां

(v) भारतेन्दुकालीन कविता

(vi) हिन्दी कहानी

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 577 **H**

Unique Paper Code : 52051222

Name of the Paper : MIL, Hindi-B Hindi Bhasha aur Sahitya

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester / Annual : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (10,10,10)

(क) साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय,

सार-सार को गहि रहे, थोथा देइ उड़ाय।

अथवा

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।

बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन।।

(ख) सटपटाति-से ससिमुखी मुख घूँघट-पटु ढाँकि।

पावक-झर-सी झमकि कै गई झरोखों झाँकि।।

अथवा

इंद्र जिम जंभ पर, बाड़व ज्यौं अंभ पर रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।

पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।

ट्रावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषण बितुंड पर जैसे मृगराज हैं।

तेज तम-अंस पर, कान्ह जिभ कंस पर यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है।

(ग) बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकरातीं अनन्त की, पाकर जहाँ किनारा ।।

हेम कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मंदिर ऊँघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा।

अथवा

वृक्ष हों भले खड़े,

हों घने हों बड़े,

एक पत्र छाँह भी,

माँग मत, माँग मत, माँग मत,

अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

(क) कबीर

(ख) जयशंकर प्रसाद

3. 'बिहारी के काव्य में भक्ति और श्रृंगार का सुंदर सामंजस्य है'-स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

भूषण की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

4. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता का मूल प्रतिपाद्य लिखिए। (10)

अथवा

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1431 **H**

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी-साहित्येतिहास लेखन के नामकरण पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

साहित्य के इतिहास लेखन में आने वाली समस्याओं पर विचार कीजिए।

2. रासो-काव्य के उद्भव एवं विकास का विवेचन कीजिए। (14)

P.T.O.

अथवा

सिद्ध-साहित्य और नाथ-साहित्य का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

3. प्रेममार्गी सूफी-शाखा की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

ज्ञानमार्गी निर्गुण शाखा के वैशिष्ट्य का विश्लेषण कीजिए।

4. रीतिमुक्त काव्यधारा की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध काव्यधाराओं का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

5. (क) किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए। (6,6)

(i) जैन-साहित्य

(ii) राम काव्य

(iii) शुद्धाद्वैतवाद

(iv) रीतिकालीन वीर काव्य

(ख) किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(i) जायसी

(ii) कबीर

42

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4453

H

Unique Paper Code : 2051001001

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Sampreshan aur Sanchar (Hindi-A)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : II

Duration : 2 Hours

Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. संप्रेषण के विभिन्न आयामों की विवेचना कीजिए। (12)

अथवा

संप्रेषण और संचार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

P.T.O.

2. वर्तमान संदर्भों में संप्रेषण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

संप्रेषण की प्रक्रिया में वक्ता और श्रोता की भूमिका का विवेचन कीजिए।

3. संचार के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

ध्वनि प्रदूषण संबंधी जन-जागरण अभियान पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

4. 'सोशल मीडिया की भाषा' पर एक संपादकीय लिखिए। (12)

अथवा

अपने विद्यार्थी जीवन की किसी अविस्मरणीय घटना के आधार पर डायरी लिखिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (6×2)

(क) ई-संप्रेषण

(ख) ब्लॉग लेखन

(ग) कूड़ा निस्तारण -(रिपोर्ट लेखन)

(घ) सांकेतिक संप्रेषण

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4454 **H**

Unique Paper Code : 2051001002

Name of the Paper : Hindi Aupcharik Lekhan (Hindi-B)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : II

Duration : 2 Hours

Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. कार्यालयी हिन्दी का परिचय देते हुए उसकी सरकारी कार्य-प्रणाली पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

व्यवसायिक हिन्दी का अर्थ बताते हुए उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

2. टिप्पण का क्या अर्थ है ? टिप्पण के प्रकारो पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

प्रतिवेदन को परिभाषित करते हुए उसके प्रारूप को लिखिये ।

3. व्यवसायिक पत्र लेखन हेतु किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ? विस्तार से लिखिए । (12)

अथवा

स्ववृत लेखन के प्रकारो का उल्लेख करते हुए उसके महत्त्व को रेखांकित कीजिए ।

4. लाइब्रेरियन के पद हेतु एक स्ववृत तैयार कीजिए । (12)

अथवा

गैर कार्यालयी पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए ।

5. किन्ही दो पर टिप्पणी लिखिए :- (6,6)

(क) विज्ञाप्ति का महत्त्व

(ख) अनुदेश

(ग) संविदा

(घ) व्यासायिक पत्र

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 4455

H

Unique Paper Code : 2051001003

Name of the Paper : Social Media aur Blog Lekhan (Hindi-C)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC**

Semester : II

Duration : 2 Hours

Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सोशल मीडिया का अर्थ बताते हुए, सोशल मीडिया के महत्व पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

सोशल मीडिया को पारिभाषित करते हुए, इसके प्रभाव को स्पष्ट कीजिए ।

2. ब्लॉग लेखन से आप क्या समझते हैं ? एक अच्छे ब्लॉग की विशेषताएँ बताइए ? (12)

अथवा

सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव की विवेचना कीजिए ।

3. निजी ब्लॉग तैयार करने की प्रक्रिया को विस्तार से लिखिए । (12)

अथवा

'वृक्ष लगाएँ, पर्यावरण बचाएँ' विषय पर सोशल मीडिया के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

4. 'सोशल मीडिया और फेक न्यूज़' विषय पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए । (12)

अथवा

'सोशल मीडिया और रोजगार' विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए ।

5. किन्हीं **दो** विषयों पर टिप्पणी लिखिए :- (6+6)

(क) ट्विटर

(ख) इंस्टाग्राम

(ग) सोशल मीडिया और महिलाएँ

(घ) अभिव्यक्ति की आजादी और सोशल मीडिया

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 5968 **H**

Unique Paper Code : 2054001203

Name of the Paper : Patkatha Aur samvaad Lekhan

Name of the Course : **Hindi : G.E**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पटकथा लेखन के महत्वपूर्ण तत्वों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (18)

अथवा

पटकथा लेखन की प्रक्रिया को विस्तार से समझाइए।

2. फीचर फिल्म की पटकथा के लिए आवश्यक बिंदुओं पर प्रकाश डालिए। (18)

P.T.O.

अथवा

किसी सामाजिक धारावाहिक की पटकथा की विशेषताएँ लिखिए।

3. संवाद लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

संवाद संरचना का विश्लेषण कीजिए।

4. धारावाहिक और फीचर फिल्म के संवाद लेखन में क्या अंतर है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (18)

अथवा

किसी ऐतिहासिक, पौराणिक फीचर फिल्म के लिए संवाद लेखन करते हुए किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : (9+9=18)

(क) पटकथा की अवधारणा

(ख) डॉक्यूमेंट्री की पटकथा

(ग) संवाद लेखन की मुख्य विशेषताएं

(घ) बाल फिल्म का संवाद लेखन

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5193 **H**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (DSC)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. मध्यकालीन बोध और आधुनिक बोध पर तर्कपूर्ण विचार कीजिए। (18)

अथवा

स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में द्विवेदी युगीन साहित्य का विवेचन कीजिए।

P.T.O.

2. हिंदी कहानी के विकास को रेखांकित कीजिए। (18)

अथवा

हिंदी आलोचना के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

3. प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

'नयी कविता नयी मनःस्थितियों की कविता है' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में विचार कीजिए।

4. हिंदी की स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पत्रकारिता की वस्तुस्थिति का मूल्यांकन कीजिए। (18)

अथवा

हिंदी के अस्मितामूलक विमर्श के महत्व का निरूपण कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए - (9+9)

(क) हिंदी खड़ी बोली का विकास

(ख) भारतेन्दु युगीन हिंदी नाटक

(ग) उत्तर छायावाद

(घ) नवगीत

(ङ) दलित विमर्श

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

H

Sr. No. of Question Paper : 4457

Unique Paper Code : 2051001006

Name of the Paper : Hindi E : Compulsory Hindi Syllabus (CHS)

Name of the Course : **Common Prog. Group (AEC)**

Semester : II

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. अपने परिवार के विषय में दस वाक्य लिखिए । (10)

अथवा

रेलवे स्टेशन के टिकट काउंटर पर होने वाली बातचीत को दस वाक्यों में लिखिए ।

2. अपने मित्र को अपनी किसी यात्रा के विषय में फोन पर बताइए । (10)

अथवा

अपने पिता जी को खेल दिवस की तैयारी के विषय में फोन पर बताइए ।

3. सब्जी की दुकान पर खरीदारी के दौरान होने वाली बातचीत को लिखिए । (10)

अथवा

बीमार होने पर डॉक्टर से होने वाली बातचीत को लिखिए ।

4. निम्नलिखित वर्णों में से **तीन** स्वर और **तीन** व्यंजन चुनकर अलग-अलग लिखिए - (6)

आ, म, व, न, ए, च, ओ, उ, र, ई

5. निम्नलिखित में से किन्हीं छह शब्दों के वचनं बदलिए - (6)

दवाई, कन्या, पत्ते, माला, दासी, चुहिया, नदियाँ, दरवाजा, बेटी।

6. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम पहचानकर लिखिए - (6)

(i) दरवाजे पर कौन है ?

(ii) मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा।

(iii) तुम कब तक लौटोगे ?

(iv) हमें अपना काम स्वयं करना चाहिए।

(v) जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

(vi) दूध में कुछ गिर गया है।

(1)

7. दिए गए वाक्यों में सें छह विशेषण शब्द पहचानकर लिखिए - (6)

(i) उसने लाल फूल तोड़ लिए।

(ii) यह कुआँ गहरा है।

(iii) वह सात फुट लंबा है।

(iv) मैंने हरे रंग का सूट सिलवाया है।

(v) बाज़ार से दो किलो चीनी लाओ।

(vi) तेज़ रोशनी में पढ़ना अच्छा होता है।

(vii) थोड़ा-सा अचार और दो।

8. निम्नलिखित में से छह क्रियापद पहचानकर लिखिए - (6)

खाना, यह, चलना, रोना, वह, उसका, लड़ाई, देखना, घर, बहन, व्यक्ति, हँसना, लिखना

अथवा

'सदाचार का ताबीज' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

5. अज्ञेय के साथ का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' का मूल्यांकन कीजिए।

6. किसी एक पर टिपपंणी लिखिए : (10)

(क) रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय

(ख) जातियों का अनूठापन का सार

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5243 **H**

Unique Paper Code : 2052101203

Name of the Paper : Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) जब हम किसी एक जाति पर ध्यान देते हैं तो निश्चय उस जाति के आचरणों से कुछ ऐसी बातें लक्षित होती है जो खास उसी जाति में पाई जाएगी और वे बातें ऐसी न होंगी जो मनुष्य मात्र

में साधारण रीति पर पाई जायें क्योंकि न कोई जाति इतनी भली है कि उसमें कोई बुरे होंगे ही नहीं। न देश का देश इतना बुरा हो सकता है कि उस जाति में एक भी भला ना हो।

अथवा

मुसलमानों के आने के पहले इस देश में नाना विश्वासों और आचार-विचारों के भेद से नाना प्रकार के धर्म-मत प्रचलित थे। परन्तु जीवन के प्रति उनकी दृष्टि में एक विशेष प्रकार की एकरूपता थी। इस एकरूपता के कारण ही नाना मतों के मानने वाले, नाना स्तरों पर खड़े हुए, नाना मार्यादाओं में बँधे हुए अनेक जनवर्ग एक सामान्य नाम से पुकारे जाने लगे। यह नाम था 'हिन्दू'।

(ख) एक दरबारी ने कहा, 'हुजूर वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदि हो गई हैं कि बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी, क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है जिसे 'विशेषज्ञ' कहते है। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में झाँककर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं।

अथवा

अपनी जिन्दगी को धोती-कुर्ते-चप्पल में घुट गई। किसी हिंदी के कवि की यह विदेशियों-सी चुस्ती और फुर्ती पलकों में अँट नहीं रही थी। तैराकी का शौक मुझे भी है, एक बार इसी नर्मदा के धुआँधार जलप्रपात में शहीद होते-होते रह गया था। तैर तैर का देर तक की लाल-लीला का स्फार संभार चला। पहाड़ और नदी दोनों ने दो ही दिनों में अज्ञेय की ऊँचाई और गहराई दिखा दी थी।

2. 'आचरण की सभ्यता' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'जातियों का अनूठापन' निबंध की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

3. 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' का सार लिखिए। (15)

अथवा

'करुणा' निबंध का सार लिखिए।

4. 'नए संघर्ष' के आधार पर निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। (15)

(ग) शिक्षित व्यक्ति का आवश्यक गुण किसे समझा जाता है।

(घ) शिक्षित व्यक्ति कैसा व्यवहार करता है ?

(ङ) 'स्व' से क्या तात्पर्य है

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **4096 I**

Unique Paper Code : 2051002004

Name of the Paper : Ability Enhancement Course Hindi (AECs) D

Name of the Course : **Common Program Group AEC**

Semester : IV

Time : 2 Hours ***Maximum Marks : 60***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **All** questions are compulsory.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. Write about any **one** of the following. 10

निम्नलिखित में से किसी **एक** के बारे में लिखिए।

अक्षर धाम मन्दिर, लाल किला, जामा मस्जिद

2. Write about any **one** of the following Indian dishes : 10

निम्नलिखित में से किसी एक भारतीय व्यंजन के बारे में लिखिए :

लिट्टी-चोखा, खीर, आलू कचौरी

3. Describe any **one** : 10

किसी एक का वर्णन कीजिए :

होली, साड़ी, कुर्ता - पायजामा, स्वतन्त्रता - दिवस

4. Write a dialogue on any **one** topic. 10

किसी **एक** विषय पर संवाद लिखिए।

नायक-नायिका का संवाद (किसी भी हिन्दी फिल्म के आधार पर)

पिता-पुत्री का संवाद (किसी भी हिन्दी नाटक के आधार पर)

गुरू - शिष्य का संवाद (किसी भी एक नाटक के आधार पर)

OR

अथवा

Write a letter 10

पत्र लिखिए

मित्र की सरकारी नौकरी में उच्च पद प्राप्त होने पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

5. किसी एक का आँखों देखा वर्णन कीजिए। 10

रेल-दुर्घटना, रेगिस्तान, मेला

6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिये। 2×5=10

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास करना है जिसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक क्षमताएं सम्मिलित हैं। शिक्षित व्यक्ति अपने शारीरिक विकास का ध्यान रखता है जिसमें वह अपने कर्तव्य का सम्यक परिपालन कर सके। बौद्धिक विकास से अभिप्राय केवल यह नहीं है कि शिक्षित व्यक्ति कुछ तथ्यों को जान लेता है बल्कि यह है कि वह जीवन के सभी क्षेत्रों में ऐसा व्यवहार करता है जो बुद्धि - विरोधी न हो। साहित्य और ललित कलाओं में प्रति अनुराग और उनके स्वर की पहचान को भी शिक्षित व्यक्ति का एक आवश्यक गुण समझा जाता है। उसका "स्व 'विस्तृत होता है क्योंकि वह स्वहित से अधिक महत्व परहित को देता है और देशहित के आगे सब कुछ न्योछावर कर सकता है। केवल साक्षर होना, पढ़ - लिख लेना शिक्षित होना नहीं है। यदि हम विनम्र हैं, उदार और सहनशील नहीं हैं, देश और समाज को सर्वोपरि नहीं मानते तो हम डिग्रीधारी भले ही हों, शिक्षित कदापि नहीं है।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।

(ख) मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास कौन करता है ?

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4097**

Unique Paper Code : **2051002005**

Name of the Paper : **Hindi E : Compulsory Hindi Syllabus (CHS)**

Name of the Course : **Common Prog. Group (AEC)-Hindi-E**

Semester : **IV**

Duration : **2 Hours** Maximum Marks : **60**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार अथवा अनुनासिक का प्रयोग कीजिए : 6

 हसमुख, बासुरी, कस, जगल, अश, ध्वनिया।

2. निम्नलिखित में से विदेशी ध्वनियों वाले **छः** शब्द पहचानकर लिखिए : 6

 राज़, गमला, गज़ल, कॉल, लड़का, ख़ुदा, फ़ल, खिड़की कागज़, लोटा, भैंस।

3. निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थानों पर विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए : 6

 (*i*) हवा चली पानी बरसा और ओले गिरे

 (*ii*) मोहन ने सोचा आज आराम करूँगा

 (*iii*) अनघ रसज्ञ और वंश कहाँ जा रहे हैं

P.T.O.

4. निम्नलिखित वाक्यों को हिंदी की वाक्य संरचना के अनुसार व्यवस्थित कीजिए : 6

(*i*) शहीदों का देश सदा आभारी रहेगा।

(*ii*) अपनी बात आपको मैं बताता हूँ।

(*iii*) ध्यानपूर्वक विद्यार्थियों को पढ़ाई करनी चाहिए।

(*iv*) पुस्तक कहाँ मिली यह आपको ?

(*v*) घास गाय खा रही है।

(*vi*) गाय का ताकतवर दूध होता है।

5. पुस्तक की दुकान पर खरीददारी करते हुए, होने वाले संवाद को लिखिए। 6

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर 100 शब्दों में लेख लिखिए : 10

(*i*) महाविद्यालय में होने वाले उत्सव

(*ii*) किसी पर्वतीय प्रदेश की यात्रा।

7. इन दिनों देखी हुई किसी **एक** हिंदी फिल्म का 100 शब्दों में संवाद लिखिए। 10

अथवा

भारतीय पर्व 'दीपावली' पर 100 शब्दों में निबंध लिखिए।

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10

बाल मजदूरी बच्चों से लिया जाने वाला वह काम है, जो जबरन बच्चों से उनके मालिकों द्वारा करवाया जाता है। यह एक दबावपूर्ण व्यवहार है, जो मालिकों द्वारा किया जाता है। बचपन पर सभी बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। जो माता-पिता के प्यार और देखरेख में उन्हें मिलना चाहिए। पर यह गैरकानूनी कृत्य बच्चों को बड़ों की तरह जीने पर मजबूर करता है। इसके कारण बच्चों के जीवन

में अनेक प्रकार की कमियाँ रह जाती हैं। बाल मजदूरी करने वाले बच्चों की न तो उचित शारीरिक वृद्धि हो पाती है और न ही मस्तिष्क का समुचित विकास हो पाता है। इसी वजह से बच्चों के बचपन के सुनहरे सपने बिखर जाते हैं और उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है । जिस उम्र में उन्हें माता-पिता का प्यार मिलना चाहिए था, उन्हें स्कूल जाने का अवसर मिलना चाहिए था, अन्य बच्चों की तरह खेल-कूद के अवसर मिलने चाहिए थे, उन सबसे ये बच्चे वंचित रह जाते हैं। बाल मजदूरी को पूरी तरह से रोकने के लिए जरूरी है कि बाल-मजदूरी कराने वाले लोगों पर सरकार कड़ी कार्रवाई करे और उन बच्चों को भी जीने का अवसर प्रदान करे।

(*i*) बाल मजदूरी से क्या तात्पर्य है ?

(*ii*) बाल मजदूरी से बच्चों को क्या नुकसान होता है ?

(*iii*) बाल मजदूरी करने वाले बच्चे किन-किन कार्यों से वंचित रह जाते हैं ?

(*iv*) बाल मजदूरी को पूरी तरह से रोकने के लिए क्या जरूरी है ?

(*v*) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (9×2=18)

(i) उपन्यास के तत्व।

(ii) कर्मभूमि उपन्यास के आधार पर सुखदा का चरित्र - चित्रण।

(iii) उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु

(iv) रागदरबारी उपन्यास में ग्रामीण जीवन।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5218 **H**

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : Hindi Upanyas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी उपन्यास के उदभव पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए। (15)

अथवा

हिन्दी उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. मुंशी प्रेमचंद अथवा मन्नू भंडारी के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए। (15)

3. कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित समस्याओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'कर्मभूमि उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन का दस्तावेज है'-इस कथन के आलोक में अमरकांत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. रागदरबारी उपन्यास में निहित व्यंग्यात्मक यथार्थ को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

रागदरबारी उपन्यास के शीर्षक पर प्रकाश डालते हुए रूप्पन बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12)

(क) "शान्तिकुमार ने आवेश से कहा-'कहीं नहीं। शास्त्र में यह लिखा है कि घी में चरबी मिलाकर बेचो, टेनी मारो, रिश्वतें खाओ, आँखों में धूल झोंको और जो तुमसे बलवान हैं, उनके चरण धो-धोकर पियो, चाहे वह शास्त्र को पैरों से ठुकराते हों।

तुम्हारे शास्त्र में यह लिखा है, तो यह करो। हमारे शास्त्र में तो यह लिखा है कि भगवान् की दृष्टि में न कोई छोटा है, न बड़ा, न कोई शुद्ध और न कोई अशुद्ध। उसकी गोद सबके लिए खुली हुई है।"

(ख) अंग्रेजों के ज़माने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखवाते थे। देसी हुकूमत के दिनों में वे देसी हाकिमों के लिए श्रद्धा दिखाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे। पिछले महायुद्ध के दिनों में, जब देश को जापान से खतरा पैदा हो गया था, उन्होंने सुदूर-पूर्व में लड़ने के लिए बहुत से सिपाही भरती कराए। अब जरूरत पड़ने पर रातोंरात वे अपने राजनीतिक गुट में सैकड़ों सदस्य भरती करा देते थे। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लम्बरदार के रूप में करते थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलिज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे। इसीलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को सँभालना पड़ा था।

मित्र थे। और, मित्रों के सामने सिद्धांत का प्रश्न उठाना ही बेकार होता है। दूसरे, वे आज निश्चय ही पहले दर्जे में सफर करने वाले थे, जिसके सामने खड़े हो कर रूमाल हिलाना मुझे निहायत दिलचस्प हरकत जान पड़ती है।

2. 'लोभ और प्रीति' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'वसंत आ गया है' निबंध का सार लिखिए। (15)

3. 'ठकुरी बाबा' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'प्रेमचंद जी के साथ दो दिन' संस्मरण में प्रतिपादित प्रेमचंद जी की चारित्रिक विशेषताओं की समीक्षा कीजिए। (15)

4. 'वैष्णव जन' में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"'शायद' बीज नाटक में मध्यवर्गीय जीवन को उजागर किया गया है" कथन की पुष्टि सोदाहरण कीजिए। (15)

5. 'अंगद का पांव' में निहित व्यंग्य का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'ठेले पर हिमालय' की मूल संवेदना बताते हुए लेखक के यात्रा अनुभव पर प्रकाश डालिए। (15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 4877 **H**

Unique Paper Code : 2052202401

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होने पर लोभ वह सात्विक रूप प्राप्त करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं। जहाँ लोभ सामान्य या जाति के प्रति होता है वहाँ वह लोभ ही रहता है। पर जहाँ किसी जाति के एक ही विशेष व्यक्ति के प्रति होता है वहाँ वह 'रुचि' या 'प्रीति' का पद प्राप्त करता है। लोभ सामान्योन्मुख होता है और प्रेम विशेषोन्मुख।

अथवा

दो कृष्णचूडाएं हैं। स्वर्गीय कविवर रबीन्द्रनाथ के हाथ से लगी वृक्षावलि में ये आखिरी हैं। इन्हें अभी शिशु ही कहना चाहिए। फूल तो इनमें कभी आये नहीं, पर वे अभी नादान हैं। भरे। फागुन में इस प्रकार खड़ी हैं मानो श्रीषाद ही हो। नील मसृण पत्तियां और सूच्य शिखन्त। दो-तीन अमरूद हैं, जो सूखे सावन भरे भादों कभी रंग नहीं बदलते इस समय दो-चार श्वेत पुष्प इन पर विराजमान हैं, पर ऐसे फूल माघ में भी थे और जेठ में भी रहेंगे।

(ख) प्रेमचन्दजी को सेवा में उपस्थित होने की इच्छा बहुत दिनों से थी। यद्यपि आठ वर्ष पहले लखनऊ में एक बार उनके दर्शन किये थे, पर उस समय अधिक बातचीत करने का मौका नहीं मिला था। इन आठ वर्षों में कई बार काशी जाना हुआ, पर प्रेमचन्दजी उन दिनों काशी में नहीं थे। इसलिए ऊपर को चिट्ठी मिलते ही मैंने बनारस केन्ट का टिकट कटाया, और इक्का लेकर बेनिया पार्क पहुँच ही गया। प्रेमचन्दजी का मकान खुली हुई जगह में सुन्दर स्थान पर है, और कलकत्ते का कोई भी हिन्दी पत्रकार इस विषय में उनसे ईर्ष्या किये बिना नहीं रह सकता।

अथवा

मेरे संकल्प के विरुद्ध बोलना उसे और अधिक दृढ़ कर देना है इसे भक्तिन जान चुकी है पर जीभ पर उसका वश नहीं। इसीसे अपने प्रश्नों की अजस्र वर्षा में भी मुझे अविचलित देखकर वह मुंह बिचका कर कह उठी, 'कल्पवास की उमिर आई तब उहाँ हड्ड जाई। का एक दिन सब नेम वरम समापत करें की परतिग्या है यह सब, मैं नियम धर्म के लिए नहीं करती यह भक्तिन को समझाना कठिन है, इससे मैं उसे समझाने का निष्फल प्रयत्न करने को अपेक्षा मोन रहकर उसकी भ्रान्ति को स्वीकृति दे देती हूँ।

(ग) वेद पढ़ने से, वर्णाश्रम धर्म का पालन करने से, कण्ठी पहनने से अथवा तिलक लगाने से कोई वैष्णव जन नहीं होता। यह सब पाप के मूल हो सकते हैं। पाखण्डी भी माला पहन सकता है, तिलक लगा सकता है, वेद पढ़ सकता है, मुख से राम-नाम का जाप कर सकता है। लेकिन पाखण्डी रहते हुए सत्याचरणी नहीं बना जा सकता। पाखण्डी पर-पीड़ा का निवारण नहीं कर सकता और पाखण्ड के रहते हुए चंचल चित्त को निश्चल नहीं रखा जा सकता।

अथवा

वैसे तो मुझे स्टेशन जा कर लोगों को विदा देने का चलन नापसंद है, पर 'इस बार मुझे स्टेशन जाना पड़ा और मित्रों को विदा देनी पड़ी। इसके कई कारण थे। पहला तो यही कि वे

2. 'लोभ और प्रीति' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'वसंत आ गया है' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

3. संस्मरण के तत्वों के आधार पर 'ठकुरी बाबा' संस्मरण की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'प्रेमचंद जी के साथ दो दिन' संस्मरण का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

4. 'वैष्णव जन' ध्वनिरूपक का सार बताते हुए आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'शायद' बीज नाटक के कथ्य को स्पष्ट कीजिए। (15)

5. "'अंगद का पांव' व्यंग्य विधा का उत्तम उदाहरण है" कथन की पुष्टि सोदाहरण कीजिए।

अथवा

'ठेले पर हिमालय' यात्रा वृतांत की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए। (15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 4898 H

Unique Paper Code : 2052202401

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi – DSC

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. निम्नलिखित गद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) किसी को कोई स्थान बहुत प्रिय हो जाता है और वह हानि और कष्ट उठाकर भी वहाँ से नहीं जाना चाहता। हम कह सकते हैं कि उसे उस स्थान का पूरा लोभ है। जन्म-भूमि का प्रेम, स्वदेश-प्रेम यदि वास्तव में अंतःकरण का कोई भाव है तो स्थान के लोभ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस लोभ के लक्षणों से शून्य देश-प्रेम कोरी बकवाद या फैशन के लिए गढ़ा हुआ शब्द है।

अथवा

मुझे ऐसा लगता है कि वसन्त भागता - भागता चलता है। देश में नहीं, काल में। किसी का वसन्त पन्द्रह दिन का है तो किसी का नौ महीने का। मौजी है अमरूद। बारह महीने इसका वसन्त ही वसन्त है। हिन्दी भवन के सामने गंध राज पुष्पों की पाँत है। ये अजीब हैं, वर्षा में ये खिलते हैं, लेकिन ऋतु विशेष के उतने कायल नहीं हैं। पानी पड़ गया तो आज भी फूल सकते हैं। कवियों की दुनिया में जिसकी कभी चर्चा नहीं हुई, ऐसी एक घास है विष्णुकान्ता। हिन्दी भवन के आंगन में बहुत है।

(ख) प्रेमचन्दजी में गुण-ही-गुण विद्यमान हों, सो बात नहीं। दोष हैं, और-सम्भवतः अनेक दोष है। एक बार महात्माजी से किसी ने पूछा था, "आप किसी पर जुल्म भी करते हैं?" उन्होंने जवाब दिया, "यह सवाल आप बा (श्रीमती गान्धी) से पूछिए।" श्रीमती शिवरानी देवी से हम प्रार्थना करेंगे कि वे उनके दोषों पर प्रकाश डालें। एक बात तो उन्होंने हमे बतला भी दी कि "इनमे प्रबन्धशक्ति का बिलकुल अभाव है। हमीं-सी हैं, जो इनके घर का इन्तजाम कर सकती हैं।"

अथवा

भक्तिन मेरे आराम की चिन्ता के कारण ही दूसरों से झगड़ती है। पर जब उसे विश्वास हो जाता है कि अमुक व्यक्ति या कार्य से मुझे कष्ट पहुँचना सम्भव नहीं तब उसकी सारी प्रतिकूलता न जाने कहां गायब हो जाती है। भीड़ से मेरी शान्ति भंग हो

सकती हैं, इस सम्भावना ने उसे जो कठोरता दी थी वह उस सम्भावना के साथ ही विलीन हो गई। वह सत्तू रखने के सीके के नीचे ईंट-पत्थर का चूल्हा बनाकर कम से कम स्थान घेरने की चेष्टा करने लगी जिससे उन आक्रमणकारियों को सुख से बस जाने का अवकाश मिल सके।

(ग) वैष्णव जन वह है जो परदुख भंजक होता है। फिर भी निरभिमानी रहता है। गांधी जी से अधिक दूसरे के दुःख-दर्द को समझने वाला कौन है। हम उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। मानते हैं, उन्होंने देश को स्वाधीन कराया। परन्तु उनका लक्ष्य था मनुष्य के दुःख-दर्द को दूर करना। स्वाधीनता तो उस लक्ष्य को पाने का साधन मात्र थी। उड़ीसा-प्रवास के समय वहाँ की दुर्दशा देखकर वे मर्माहत हो उठे थे।

अथवा

पुरुष : कोई भी चीज मन को उलझाती नहीं। उलझाती है, तो बस पाँच मिनट के लिए, दस मिनट के लिए, घंटे-भर के लिए। नहीं, घंटे भर के लिए कोई चीज मन को नहीं उलझाती...।

स्त्री : रोज दो-दो घंटे तो बात करते रहते हो, और कहते हो कि... ।

पुरुष : ...कोई चीज होल्ड नहीं करती। लगता है, कुछ होना था, नहीं हुआ। शायद कल होगा। पर वह कल होता ही नहीं। बात कुछ समझ में नहीं आती।

4. पठित कविताओं के आधार पर निराला के काव्य का मुख्य स्वर स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' कविता का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

5. महादेवी वर्मा के काव्य-वैशिष्ट्य रेखांकित कीजिए। (15)

अथवा

'ठुकरा दो या प्यार करो' कविता का काव्य-सौंदर्य लिखिए।

23

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 5170 **H**

Unique Paper Code : 2052102402

Name of the Paper : Aadhunik Hindi Kavita (Chhayawad Tak)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) सब गुरु जन को बुरो बतावै।
अपनी खिचड़ी अलग पकावै।।
भीतर तत्व न झूठी तेजी।
क्यों सखि सज्जन नहिं 'अँगरेज'।।

अथवा

अब तो विषय की ओर से मन की सुरति को फेर दो,
जिस ओर गति हो समय की उस ओर मति को फेर दो।
गाया बहुत-कुछ राग तुमने योग और वियोग का,
संचार कर दो अब यहाँ उत्साह का, उद्योग का।।

(ख) वन, उपवन, गिरी, सानु कुंज में मेघ बरस पडते हैं।
मेरा आत्म-प्रलय होता है, नयन नीर झड़ते हैं।
पढ़ो लहर, तट, तृण, तरु गिरि, नभ, किरन, जलद पर प्यारी।
लिखी हुई यह मधुर कहानी विश्व-विमोहन हारी।

अथवा

वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
उषा बटोरती अरुण गात !
अब जागो जीवन के प्रभात !

(ग) "दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल,
किया है अपनी प्रतिभा से चकित-चल;
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल -
ठाठ जीवन का वही - जो ढह गया है।"

अथवा

वीरों का कैसा हो वसंत?
आ रही हिमाचल से पुकार;
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

2. 'नए ज़माने की मुकरी' में भारतेन्दु को जीवन-यथार्थ का जितना गहरा बोध है उतना शायद ही किसी को हो-स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'भारत-भारती' (भविष्यत् खंड) की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

3. 'पथिक' कविता के आधार पर रामनरेश त्रिपाठी की जीवन-दृष्टि का परिचय दीजिए। (15)

अथवा

'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

(14)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1289 **H**

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : Bhasha aur Samaj (SEC)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. भाषा और समाज एक दूसरे पर आश्रित हैं। इस कथन पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

भाषा का समाजशास्त्र से क्या तात्पर्य है ? सविस्तार समझाइए ।

2. भाषा समुदाय से क्या तात्पर्य है ? हिंदी भाषा समुदाय को व्याख्यायित कीजिए । (15)

P.T.O.

अथवा

बहुभाषिकता से आप क्या समझते हैं? भारतीय बहुभाषिकता की स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

3. 'भाषा संस्कृति की वाहक है'। इस कथन को समझाते हुए भाषा और संस्कृति के अंतः संबंध पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

भाषाई अस्मिता से क्या अभिप्राय है ? भाषा जेंडर को किस प्रकार व्याख्यायित करती है ?

4. भाषा सर्वेक्षण के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

भाषा नमूनों के सर्वेक्षण की प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक लिखिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी कीजिए। (15)

(क) भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार

(ख) भाषा और समाज

(ग) भाषाई अस्मिता

(घ) भाषा नमूनों का विश्लेषण

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5735 **H**

Unique Paper Code : 2054002003

Name of the Paper : Blog Lekhan

Name of the Course : **Hindi (GE)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. ब्लॉग क्या है? इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

ब्लॉग की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए।

2. ब्लॉग लेखन और सामाजिक रचनात्मकता पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

ब्लॉग लेखन जन भागीदारी को बढ़ावा देते हैं, स्पष्ट कीजिए ।

3. फिल्म एवं मनोरंजन आधारित ब्लॉगों का सामान्य परिचय दीजिए (15)

अथवा

सामाजिक- राजनीतिक ब्लॉग लेखन पर प्रकाश डालिए।

4. ब्लॉगस्पॉट अथवा किसी अन्य प्लेटफॉर्म पर ब्लॉग निर्माण की पूरी प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

शिक्षा संबंधी किसी विषय पर आधारित एक ब्लॉग लिखिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी कीजिए

(क) ब्लॉग लेखन और सोशल मीडिया

(ख) ब्लॉग निर्माण: भाषा एवं संरचना

(ग) ब्लॉग और समाज

(घ) व्यक्तिगत एवं सामूहिक ब्लण्ग

(10×3=30)

2. संस्मरण विधा के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

जीवनी का सामान्य परिचय दीजिए।

3. आकाशदीप कहानी के नायक बुद्धगुप्त की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

निर्मल वर्मा की कहानी परिंदे की मूल सवेदना लिखिए।

4. जबान निबन्ध के माध्यम से बालकृष्ण भट्ट क्या कहना चाहते है? स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

सच्ची वीरता निबन्ध की समीक्षा कीजिए।

5. मालव प्रेम एकांकी के कथ्य पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'गुगिया' संस्मरण के आधार पर गुगियाँ की चारित्रिक विशेषतायें लिखिए।

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(i) एकांकी

(ii) कहानी के तत्व

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 5926 **H**

Unique Paper Code : 2055002002

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : **G.E. : Hindi-B**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. **इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।**

2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।**

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) शैल के एक ऊचौ शिखर पर चम्पा के नाविकों को सावधान करने के लिए सुदृढ़ दीप-स्तम्भ बनवाया गया था। आज उसी का महोत्सव है। बुधगुप्त स्तम्भ के द्वार पर खड़ा था। शिविका

से सहायता देकर चंपा को उसने उतारा दोनों ने भौतर पदार्पण किया था कि बांसुरी और ढोल बजने लगे। पक्तियों में कुसुम - भूषण से सजी वन-बालाएं फूल उछालती हुई नाचने लगीं।

अथवा

"'क्या तुम नियति में विश्वास करतें हो, ह्यूबर्ट?'" डॉक्टर ने कहा। ह्यूबर्ट दम रोके प्रतीक्षा करता रहा वह जानता था कि कोई भी बात कहने से पहले डॉक्टर को फिलासोफाइज करने की आदत थी डॉक्टर टैरेस के जगले से सटकर खड़ें हो गये। फीकी-सी चांदनी में चीड के पेड़ों की छायाएं लॉन पर गिर रही थी कभी-कभी कोई जुगनू अन्धेरें में हरा प्रकाश छिड़कता हुआ हवा में गायब हो जाता था।

(ख) अब धर्म-सबंध में जिह्वा पर लगाम रखने की कितनी आवश्यकता है सो दिखलाते है सच तो यों है कि जीभ पर बिना कोड़ा रखे धर्म निष्ठों को धरम धुरंधर बनने का दावा करना सर्वथा व्यर्थ है। वह अवश्य धोखे में पडा है जो अपने को धर्म निष्ठ तो मानता है पर जीभ को अपने काबू में नहीं किया। झूट बोलना, झूठी गवाही देना, चुगली, बदगोई इत्यादि से बचना ही जीभ पर लगाम नही कहलावेगा क्योकिं झूठी गवाही, चुगली, गाली इत्यादि बड़े-बड़े पापों का विषय निराला है।

अथवा

सच्चे वीर पुरुष धीर गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शान्ति समुन्द्र की तरह विशाल और गहरी या आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है। वें कभी चचल नहीं होते द्य रामायण में वाल्मीकि जी ने कुम्भ करण की गाढ़ी नींद में वीरता का एक चिह्न दिखलाया है। सच है, सच्चे वीरो की नींद आसानी से नहीं खुलती। वें सत्व गुण के क्षीर-समुन्द्र में ऐसे डूबे रहतें है किउनको दुनिया की खबर ही नहीं होती। वें संसार के सच्चे परोपकारी होतें हैं।

(ग) जो प्रेम देश की हत्या करें, उसका गला घोंटना ही होगा। श्रीपाल मालवा के मानों, नदी-पर्वतों से परिचित है शक सैन्य सख्या में हमसे अधिक है उनके पास अपार अश्वारोही दल है, अस्त्र-शस्त्र भी अपरिमित है। यदि उन्हें इस देश की भूमि से परिचित व्यक्ति मित्र जाए तो परिणाम हमारे लिए भयकर है। सोचो विजया, उस स्थिति में हमारे देश का क्या होगा?

अथवा

मेरे बैठने के स्थान अनेक हैं। कभी पीपल के तने का सहारा लेकर उसकी ऊची जड़ों का सिंहासन बनाती हूँ, कभी आम के नीचे सूखी पत्तियों के बिछौने का। कभी किसी के ओसारे में पड़ी खटिया पर आसीन होती हूँ, कभी किसी के आगन में तुलसी चौरा के सामने चटाई पर पत्र लिखने का प्रस्ताव सबसे पहले जो करता है, उसी के इच्छानुसार शेष को चलना पड़ता है। पत्र लिखवाने वाला निकट बैठता है और सब उससे कुछ हटकर आस पास केवल अभिवादन भेजने वाले आते-जाते रहते हैं।

2. हिंदी कहानी के तत्वों का परिचय दीजिए।

अथवा

हिंदी एकांकी विधा का परिचय दीजिए। (15)

3. चंद्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' कहानी का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

भीष्म साहनी कृत 'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

4. 'एक दुराशा' निबंध का सार अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

अथवा

सरदार पूर्ण सिंह कृत 'मजदूरी और प्रेम' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (15)

5. महादेवी द्वारा रचित संस्मरण 'बिबिया' के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

उपेन्द्रनाथ अश्क विरचित एकांकी 'सूखी डाली' की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :- (6)

(क) बेला का चरित्र चित्रण।

(ख) संस्मरण विधा।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5929 **H**

Unique Paper Code : 2055092002

Name of the Paper : हिंदी गद्य विकास के विविध चरण (ख)

Name of the Course : **B.Com. – GE : Hindi B**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (कोई तीन) (8×3=24)

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था, ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कहलाती है। वजीरा सिंह कह रहा था कि

कैसे मन-मन भर फ़्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहना सिंह से सारे हाल सुन और कागजात पाकर वे उसकी तुरंत-बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

अथवा

अगर चीफ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देंगी। अंग्रेज को तो दूर से ही देख कर घबरा उठती थीं, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाएं। मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती थीं। चुपचाप कुर्सी पर से टांगें लटकाए वहीं बैठी रहीं।

(ख) क्या भारत में ऐसा समय भी था,जब प्रजा के लोग राजा के घर जाकर होली खेलते थे और राजा-प्रजा मिलकर आनंद मनाते थे! क्या इसी भारत में राजा लोग प्रजा के आनंद को किसी समय अपना आनंद समझते थे?अच्छा यदि आज शिवशम्भू शर्मा अपने मित्रवर्ग सहित अबीर गुलाल की झोलियाँ, भरे रंग की पिचकारियाँ लिए अपने राजा के घर होली खेलने जाए तो कहाँ जाए? राजा दूर सात समुद्र पार है। राजा का केवल नाम सुना है। न राजा को शिवशम्भू ने देखा, न शिवशम्भू को राजा ने।

अथवा

बेटा, यह कुटुंब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ है। डालियों से ही पेड़ पेड़ है। और डालियां छोटी हो चाहे बड़ी सब उसकी छाया को बढ़ाती है। मैं नहीं चाहता कोई डाली उससे टूटकर पृथक हो जाए। तुम सदैव मेरा कहा मानते रहे हो। बस, यही बात मैं कहना चाहता हूं..यदि मैंने सुन लिया-किसी ने छोटी बहू का निरादर किया है, उसकी हंसी उड़ाई है या उसका समय नष्ट किया है तो इस घर से मेरा नाता सदा के लिए टूट जाएगा।

(ग) हल चलाने वाले और भेड़ चराने वाले प्राय: स्वभाव से ही साधु होते हैं। हल चलाने वाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवन कुंड की ज्वाला की किरणें चावल के लंबे और सफेद दानों के रूप में निकलती हैं। गेहूं के लाल लाल दाने इस अग्नि की चिंगारियां की डालयों-सी हैं। मैं जब कभी अनार के फूल और फल देखता हूं तब मुझे बाग के मालिक का रुधिर याद आ जाता है।

अथवा

आत्मघात, मनुष्य की जीवन से पराजित होने की स्वीकृति है। बिबिया जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करते। कौन कह सकता है कि उसने सब ओर से निराश होकर अपनी अंतिम पराजय को भूलने के लिए ही यह आयोजन नहीं किया? संसार ने उसे निर्वासित कर दिया, इसे स्वीकार करके और गरजती हुई तरंगों के सामने आंचल फैलाकर क्या वह अभिमानिनी स्थान की याचना कर सकती थी?

कूल पर कितने ही गोपाल वंशी टेरते कितने ही नंदलाल रासलीला का स्वप्न देखते! बुधिया जिस सरेह में निकल जाती जिंदगी तरंगे लेती।

2. निबंध का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

एकाँकी की परिभाषा देते हुए उसका सामान्य परिचय प्रस्तुत कीजिए। (15)

3. बड़े भाई साहब कहानी शिक्षा व्यवस्था पर टिप्पणी है। कैसे?

अथवा

सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत' के खड़गसिंह का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध के वैचारिक पक्ष का विवेचन कीजिए।

अथवा

'मेले का ऊँट' का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

5. 'भोलाराम का जीव' में व्यक्त भ्रष्टाचार की समस्या पर अपना मत लिखिए। (15)

अथवा

'बुधिया' एक अविस्मरणीय चरित्र क्यों है? स्पष्ट कीजिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए - (6)

(क) कहानी

(ख) व्यंग्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper	:	5930 H
Unique Paper Code	:	2055002003
Name of the Paper	:	Hindi Gadya Udbhav aur Vikas (C)
Name of the Course	:	B.A. (Prog.) Hindi C – G.E.
Semester	:	IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) ऐसे लगन, ऐसे प्यार, ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यारे को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, रुपया, माल, असबाब, जमीन, यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। परंतु सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। मैं इसके बिना नहीं रह सकूँगा, उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी।

अथवा

महज इम्तहान पास कर लेना कोई चीज नहीं असल चीज है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजो को चक्रवर्ती कहते है। आजकल अंगरेजो के राज्य का विस्तार बहुत बढा हुआ है, पर इन्हे चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेक राष्ट्र अँगरेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते। बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था। संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चिल लू पानी देनेवाला भी न बचा। आदमी जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराए नही। अभिमान किया और दीन-दुनिया से गया।

(ख) मानव-शरीर का अध्ययन करने वाले प्राणि-विज्ञानियों का निश्चित मत है कि मानव-चित्त की भाँति मानव-शरीर में भी बहुत-सी अभ्यासजन्य सहज वृत्तियाँ रह गई हैं। दीर्घकाल तक उनकी आवश्यकता रही है। अतएवं शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा है। अतएव शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा ही, और शरीर के अनजान में भी, अपने-आप काम करती हैं। नाखून का बढ़ना उसमें से एक है। केश का बढ़ना दूसरा है। दाँत का दुबारा उठना तीसरा है। पलकों का गिरना चौथा है।

अथवा

मारवाड़ियों की भाषा में समझ लेता हूँ तो क्या मारवाड़ के ऊँट की बोली समझ में न आवेगी? इतने में तरंग कुछ अधिक हुई। ऊँट की बोली साफ-साफ समझ में आने लगी। ऊँट ने उन मारवाड़ी बाबूओं की ओर -धनी करके कहा: 'बेटा! तुम बच्चे हो, तुम मुझे क्या जानोगे? यदि मेरी उमर का कोई होता - का वह जानता। तुम्हारे बाप के बाप जानते थे कि मैं कौन हूँ। तुमने कलकत्ते के महली में जन्म लिया, तुम पोतड़ों के अमीर हो। मेले में बहुत चीजें हैं, उन्हें देखो और यदि -तुम्हें कुछ फुरसत हो तो लो सुनो, सुनाता हूँ-आज दिन तुम विलायती फिटिन, टमटम और जोड़ियों पर घूमते-फिरते हो, जिसकी कतार तुम मेले के द्वार पर मीलों तक छोड़ आए हो, तुम उन्हीं पर चढ़कर मारवाड़ से कलकत्ते नहीं पहुँचे थे।

(ग) स्त्री ने गुर्रा कर नारद की ओर देखा। बोली, 'अब कुछ मत बको महाराज! तुम साधु हो, उचक्के नहीं हो। ज़िंदगी भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखा।'

नारद हँस कर बोले, 'हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही हर अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता मैं चला।'

अथवा

उसकी चुनर का रंग कभी मलिन नहीं होता। उसकी चोली सिवाई पटी का दर्जी सिता है। मानो वह रोज घास को आती जाती है। लेकिन उसके हाथ में ठेले की क्या बात, आप घिस्से भी नहीं पाएंगे। रंग वही सांवला है लेकिन उसमें गड़हे के सड़े पानी की मुर्दनी नहीं है, कालिंदी का कलकल छलछल है। जिसके

8

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5928 **H**

Unique Paper Code : 2055092001

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas ke Vividh Charan (A)

Name of the Course : **GE : Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए

2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : $(8\times3=24)$

(क) इसी भीड़ में एक खूबसूरत भोला-भाला लड़का एक छड़ी पर सवार होकर अपने पैरों पर उछल-उछल फर्जी घोड़ा दौड़ा रहा था, और अपनी सादगी की दुनिया में ऐसा मगन था कि जैसे

वह इस वक़्त सचमुच किसी अरबी घोड़े का शहसवार है। उसका चेहरा उस सच्ची ख़ुशी से कमल की तरह खिला हुआ था जो चंद दिनों के लिए बचपन ही में हासिल होती है और जिसकी याद हमको मरते दम तक नहीं भूलती। उसका दिल अभी तक पाप की गर्द और धूल से अछूता था और मासूमियत उसे अपनी गोद में खिला रही थी।

अथवा

दो दिन चिराग के घर की छानबीन होती रही थी । जब उसका सारा सामान लूटा जा चुका, तो न जाने किसने उस घर को आग लगा दी थी। रक्खे पहलवान ने तब कसम खायी थी कि वह आग लगाने वाले को जिंदा ज़मीन में गाड़ देगा, क्योंकि उस मकान पर नज़र रखकर ही उसने चिराग को मारने का निश्चय किया था। उसने उस मकान को शुद्ध करने के लिए हवन सामग्री

भी ला रखी थी। मगर आग लगाने वाले का तबसे आज तक पता नहीं चल सका था। अब साढ़े सात साल से रक्खा उस मलबे को अपनी जायदाद समझता आ रहा था, जहाँ न वह किसी को गाय-भैंस बाँधने देता था और न ही खुमचा लगाने देता था। उस मलबे से बिना उसकी इज़ाज़त के कोई एक ईट भी नहीं निकाल सकता था।

(ख) युद्ध के अतिरिक्त संसार में और भी ऐसे विकट काम होते हैं जिनमें घोर शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है और प्राण-हानि तक की संभावना रहती है। अनुसंधान के लिए तुषार मंडित अभ्रभेदी अगम्य पर्वतों की चढ़ाई, ध्रुव देश या सहारा के रेगिस्तान का सफ़र, क्रूर बर्बर जातियों के बीच अज्ञात घोर जंगलों में प्रवेश इत्यादि भी पूरी वीरता और पराक्रम के कर्म हैं। इनमें जिस आनंदपूर्ण तत्परता के साथ लोग प्रवृत्त हुए हैं, वह भी उत्साह ही है ।

अथवा

वह आचरण, जो धर्म-सम्प्रदायों के अनुच्चारित शब्दों को सुनाता है, हममें कहाँ! जब वही नहीं तब फिर क्यों न ये संप्रदाय हमारे मानसिक महाभारतों के कुरुक्षेत्र बनें! क्यों न अप्रेम, अपवित्रता, हत्या और अत्याचार इन सम्प्रदायों के नाम से हमारा खून करें! कोई भी धर्म-संप्रदाय आचरण-रहित पुरुषों के लिए कल्याणकारक नहीं हो सकता; और आचरण वाले पुरुषों के लिए सभी धर्म-संप्रदाय कल्याणकारक हैं। सच्चा साधु धर्म को गौरव देता है, धर्म किसी को गौरवान्वित नहीं करता ।

(ग) धाय माँ! पागल कौन नहीं है? महाराणा विक्रमादित्य अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल हैं। मल्ल-क्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराज बनवीर, महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता

से पागल हैं। वे विक्रमादित्य के अन्त:पुर में प्रलाप करते हैं। यह आनंद ही उनका पागलपन है। सारा नगर आज के त्यौहार में पागल है। तुम कुँवर उदयसिंह के स्नेह में पागल हो और मैं? ढ्ढहँसकर ऋ मेरी कुछ न पूछो धायमाँ! मैं तो इन सबके पागलपन में पागल हूँ।

अथवा

नारद उस बाबू के पास गए। उसने तीसरे के पास भेजा । तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास । जब नारद पचीस-तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आये, तब एक चपरासी ने कहा- ''महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए! आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम

नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए । उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जाएगा ।''

2. एकांकी विधा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

कहानी के तत्व बताते हुए उनका विश्लेषण कीजिये ।

3. 'अनमोल रतन' कहानी का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। (15)

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

4. 'उत्साह' निबंध की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध में निहित उद्देश्य स्पष्ट कीजिये।

5. 'दीपदान' एकांकी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिये । (15)

अथवा

'भोलाराम का जीव' व्यंग्य का प्रतिपाद्य लिखिए ।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए: (6)

(क) संस्मरण

(ख) भारतेंदु युगीन निबंध

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 5927 **H**

Unique Paper Code : 2055092003

Name of the Paper : Hindi Gadya ke Vividh Charan (C)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) GE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए

2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित में से **किन्ही तीन** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8+8+8=24)

(क) आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त

P.T.O.

छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली, और दोनों के मुहँ में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया । यहाँ भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरों की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।

अथवा

निस्संदेह बहादुर की वजह से सबको खूब आराम मिल रहा था। घर खूब साफ और चिकना रहता । कपड़े चमाचम सफेदा निर्मला की तबीयत भी काफी सुधर गई। अब कोई एक खर भी न टकसाता था। किसी को मामूली से मामूली काम करना होता तो वह बहादुर को आवाज देता। 'बहादुर, एक गिलास पानी' 'बहादुर पेंसिल नीचे गिरी है, उठाना' । इसी तरह की फरमाइशें! बहादुर

घर में फिरकी की तरह नाचता रहता। सभी रात में पहले ही सो जाते थे और सवेरे आठ बजे से पहले न उठते थे।

(ख) वीरता का विकास नाना प्रकार से होता है। कभी तो उसका विकास लड़ने-मरने में, खून बहाने में, तलवार-तोप के सामने जान गवाने में होता है; कभी प्रेम के मैदान में उसका झंडा खड़ा होता है। कभी साहित्य और संगीत में वीरता खिलती है। कभी जीवन के गूढ़ तत्त्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। कभी किसी आदर्श पर और कभी किसी पर वीरता अपना फरहरा लहराती है। परंतु वीरता एक प्रकार का इलहाम है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया; एक नया जलाल पैदा हुआ; एक नयी रौनक, एक नया रंग, एक नयी बहार, एक नयी प्रभुता संसार में छा गई।

अथवा

घर फूंकने का अर्थ हैं धन और मान का मोह त्याग देना, भूत और भविष्य की चिंता छोड़ देना और सत्य के सामने सीधे खड़े होने में जो कुछ भी बाधा हो उसे निर्ममता पूर्वक ध्वंस कर देना। पर सत्यों का सत्य यह हैं कि लोग कबीरदास के साथ चलने की प्रतिज्ञा करने के बाद भी घर नहीं फूँक सके। मठ बने, मंदिर बने, प्रचार के साधन आविष्कार किये गये और उनकी महिमा बताने के लिए अनेक पोथियाँ रची गई। इस बात का बराबर प्रयत्न होता रहा कि अपने इर्द-गिर्द के समाज में कोई यह न कह सके कि इन का अमुक काम सामाजिक दृष्टि से अनुचित है ! अर्थात विद्रोही बनने की प्रतिज्ञा भूल गई; सुलह और समझौते का रास्ता स्वीकार कर लिया गया।

(ग) शैशव की स्मृतियों में एक विचित्रता है। जब हमारी भावप्रवणता गंभीर और प्रशांत होती है, तब अतीत की रेखाएं कुहरे में से स्पष्ट होती हुई वस्तुओं के समान अनायास ही स्पष्ट-से-स्पष्टतर होने लगती है; पर जिस समय हम तर्क से उनकी उपयोगिता सिद्ध करके स्मरण करने बैठते हैं, उस समय पत्थर फेंकने से हट कर मिल जाने वाली, पानी की काई समान विस्मृति उन्हें फिर-फिर ढक लेती है।

अथवा

मंगर का स्वाभिमान - गरीबों में भी स्वाभिमान ? लेकिन, मंगर की खूबी यह भी रही है। मंगर ने किसी की बात कभी बरदाश्त नहीं की और शायद अपने से बड़ा किसी को मन से माना भी नहीं। मंगर मेरे बाबा का अदब करता था, शायद उनके बुढ़ापे

के कारण ! सुना है, मेरे बाबूजी को वह बहुत चाहता था। शायद, उनके नेक स्वभाव के कारण ! किंतु मेरे चाचाओं को तो उसने हमेशा अपनी बराबरी का ही समझा, और मुझे तो वह कल तक 'तू' ही कहकर पुकारता रहा है। किसकी मजाल, जो मंगर को बदजुबान कहे – हलवाहों को मिलनेवाले नित दिन की गालियाँ तो दूर की बात।

2. भारतेंदु युगीन हिंदी निबंध का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

प्रेमचंदयुगीन हिंदी कहानी का परिचय दीजिए ।

3. 'दो बैलों की कथा' कहानी की सार लिखिए। (15)

अथवा

'बहादुर' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

4. 'सच्ची वीरता' की मूल संवेदना को विस्तार से बताइये। (15)

अथवा

'घर जोड़ने की माया' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. 'रामा' की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'मंगर' रेखाचित्र के आधार पर भारतीय किसानों की दशा का वर्णन कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए। (6)

(क) संस्मरण

(ख) एकांकी

6

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 5925 **H**

Unique Paper Code : 2055002001

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **G.E. : Hindi A**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) बहुत दिनों बाद बाज़ारों में तुरेदार पगड़ियाँ और टोपियाँ नज़र आ रही थीं। लाहौर से आए हुए मुसलमानों में काफी संख्या ऐसे लोगों

की थी, जिन्हें विभाजन के समय मजबूर होकर अमृतसर से जाना पड़ा था। साढ़े सात साल में आए अनिवार्य परिवर्तनों को देखकर कहीं उनकी आँखों में हैरानी भर जाती और कहीं अफ़सोस घिर आता-वल्लाह! कटरा जयमल सिंह इतना चौड़ा कैसे हो गया? क्या इस तरफ के सब-के-सब मकान जल गए? यहाँ हकीम आसिफ़ अली की दुकान थी न? अब यहाँ एक मोची ने कब्जा कर रखा है।

अथवा

अपने मूल रूपों में सुख और दुःख दोनों की अनुभूतियाँ कुछ बँधी हुई शारीरिक क्रियाओं की ही प्रेरणा प्रवृत्ति के रूप में करती हैं। उनकी भावना, इच्छा और प्रयत्न की अनेकरूपता का स्फुरण नहीं होता। विशुद्ध सुख की अनुभूति होने पर हम बहुत करेंगे - दाँत निकालकर हुँसेंगे, कूदेंगे या सुख पहुँचाने वाली वस्तु से लगे रहेंगे, इसी प्रकार शुद्ध दुःख में हम बहुत करेंगे-हाथ-पैर

पटकेंगे, रोयेंगे या दुःख पहुँचाने वाली वस्तु से हटेंगे - पर हम चाहे कितना ही उछल-कूदकर हँसे, कितना ही हाथ-पैर पटककर रोयें, इस हँसने या रोने को प्रयत्न नहीं कह सकते। ये सुख और दुःख के अनिवार्य लक्षणमात्र हैं, जो किसी प्रकार की इच्छा का पता नहीं देते। इच्छा के बिना कोई शारीरिक क्रिया प्रयत्न नहीं कर सकती।

(ख) पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ में ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे-ही-लेटे गर्व से बोले, "चलो, हम आते हैं।" यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले,

"बाबूजी, आशीर्वाद! कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गई। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए।

अथवा

हमारे शैशवकालीन अतीत और प्रत्यक्ष वर्तमान के बीच में समय-प्रवाह का पाट ज्यों-ज्यों चौड़ा होता जाता है, त्यों-त्यों हमारी स्मृति में अनजाने ही एक परिवर्तन लक्षित होने लगता है। शैशव की चित्रशाला के जिन चित्रों से हमारा रागात्मक संबंध गहरा होता है, उनकी रेखाएँ और रंग इतने स्पष्ट और चटकीले होते चलते हैं कि हम वार्धक्य की धुंधली आँखों से भी उन्हें प्रत्यक्ष देखते रह सकते हैं। पर जिनसे ऐसा संबंध नहीं होता, वे फीके होते-होते इस प्रकार स्मृति से धुल जाते हैं कि दूसरों के स्मरण दिलाने पर भी उनका स्मरण कठिन हो जाता है।

(ग) मन फिर घूम गया कौसल्या की ओर, लाखों-करोड़ों कौसल्याओं की ओर, और लाखों-करोड़ों कौसल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम-अरूप कौसल्या की ओर, इन सबके राम बन में निर्वासित हैं, पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी उनके माथे पर बँधा है और उसी के भीगने की इतनी चिंता है? क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरंभ होने के पूर्व एक निश्चित मुहूर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है? क्या बात है कि तुलसीदास ने 'कानन' को 'सत अवध समाना' कहा और चित्रकूट में ही पहुँचने पर उन्हें 'कलि की कुटिल कुचाल' दीख पड़ी? क्या बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोकमानस के राजा राम बने हुए हैं? कहीं-न-कहीं इन सबके बीच एक संगति होनी चाहिए।

अथवा

भवानी! तुमने मेरे हृदय को कैसा कर दिया! मुझ बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यही राजपूतनी का व्रत है। यही राजपूतनी की मर्यादा है। यही राजपूतनी का धर्म है। मेरा हृदय वज्र का बना दो! माता के हृदय के स्थान पर पत्थर बना दो, जिससे ममता का स्रोत बंद हो जाए। भवानी! मैं चित्तौड़ की सच्ची नारी बनूँ।

2. निबंध-विधा का स्वरूप स्पष्ट करते हुए हिंदी निबंध के विकास-क्रम को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

व्यंग्य-विधा का परिचय देते हुए हिंदी साहित्य में व्यंग्य के विकास पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'मलबे का मालिक' कहानी विभाजन की त्रासदी को किस रूप में हमारे सामने रखती है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'नमक का दारोगा? कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

(15)

4. 'भाव या मनोविकार' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध की केंद्रीय भावना को अभिव्यक्त कीजिए। (15)

5. 'दीपदान' एकांकी का मूल संदेश स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सुभद्रा के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(15)

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए –

(क) कहानी के तत्त्व

(ख) रेखाचित्र की विशेषताएँ (6)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 4538 **H**

Unique Paper Code : 2051002001

Name of the Paper : Vyavharik Hindi (Hindi A)

Name of the Course : **AEC : Common Prog. Group**

Semester : IV

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।
3. **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं ।

1. बोलचाल में प्रयोग होने वाली व्यावहारिक हिन्दी की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

अथवा

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि बैंकों में इस्तेमाल होने वाली हिन्दी तकनीकी प्रयोग के लिए पूर्णतया उपयुक्त है।- अपनी राय लिखिए। (15)

2. सम्पर्क-भाषा के रूप में हिन्दी के बदलते हुए स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हैदराबादी हिन्दी की कुछ विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

3. बाजार में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी सामान्य हिन्दी से किस तरह अलग है? सोदाहरण स्पष्ट कीजए।

अथवा

बैंकों में प्रयोग होने वाले पारिभाषिक शब्द क्यों आवश्यक है? उदाहरण सहित पुष्ट कीजिए। (15)

4. कार्यालयों में प्रचलित किन्हीं दस पारिभाषिक शब्दों के आधार पर कार्यालयी पारिभाषिक शब्दावली पर प्रकाश डालिए।

अथवा

किसी एक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल से जुड़े यात्रा संस्मरण को लिखिए। (15)

(10,000)

है। समीप के शब्द भी उस शब्द-विशेष का नवीन अर्थ दयोतन करने में सहायक होते हैं। भाषा के निर्माण में शब्दों के इस व्यवहार का बहुत हाथ होता है। अर्थ-बोध व्यवहार पर निर्भर करता है, शब्द-शास्त्र में पर्यायवाची तथा अनेकार्थवाची शब्द इसके प्रमाण हैं। इसी अर्द्ध-चमत्कार का माहात्म्य है कि कवि की वाणी में अभिधा से विलक्षण अर्थ साहित्य में मान्य हुए।

2. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' कविता में निहित राष्ट्रीय भावना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. 'पुरस्कार' कहानी की कथावस्तु पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'गुंडा' कहानी के नन्हकू सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए?

4. नाटक के तत्वों के आधार पर 'अजातशत्रु' नाटक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'अजातशत्रु' नाटक के उद्देश्य पर विचार कीजिए।

5. 'यथार्थवाद और छायावाद' निबंध के आधार पर जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'यथार्थवाद और छायावाद' निबंध की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

(2500)

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 4994 **H**

Unique Paper Code : 2052202403

Name of the Paper : किसी एक साहित्यकार का अध्ययन (जयशंकर प्रसाद)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के- रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में, सुवाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो!

अथवा

जीवन कितना? अति लघु क्षण,
ये शलभ पुंज-से कण-कण,
तृष्णा वह अनलशिखा बन

P.T.O.

दिखलाती रक्तिम यौवन।
जलने की क्यों न उठे उमंग?

(ख) उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख-कल्पना थी, वह जैसे अन्धकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो? फिर सहसा सोचने लगी- वह क्यों सफल हो? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय? मगध का चिरशत्र! ओह, उसकी विजय! कोशल-नरेश ने क्या कहा था- 'सिंहमित्र की कन्या'। सिंहमित्र, कोशल का रक्षक वीर, उसी की कन्या आज क्या करने जा रही है? नहीं, नहीं, मधूलिका! मधूलिका!! जैसे उसके पिता उस अन्धकार में पुकार रहे थे। वह पगली की तरह चिल्ला उठी। रास्ता भूल गई।

अथवा

ईसा की अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में वही काशी नहीं रह गयी थी, जिसमें उपनिषद् के अजातशत्रु की परिषद् में ब्रह्मविद्या सीखने के लिए विद्वान ब्रह्मचारी आते थे। गौतम बुद्ध और शंकराचार्य के धर्म-दर्शन के वाद-विवाद, कई शताब्दियों से लगातार मंदिरों और मठों के ध्वंस और तपस्वियों के वध के कारण, प्राय: बन्द-से हो गये थे। यहाँ तक कि पवित्रता और छुआछूत में कट्टर वैष्णव-धर्म भी उस विशृंखला में, नवागन्तुक धर्मोन्माद में अपनी असफलता देखकर काशी में अघोर रूप धारण कर रहा था। उसी समय समस्त न्याय और बुद्धिवाद को शस्त्र-बल के सामने झुकते देखकर, काशी के विच्छिन्न और निराश

नागरिक जीवन ने, एक नवीन सम्प्रदाय की सृष्टि की। वीरता जिसका धर्म था। अपनी बात पर मिटना, सिंह-वृत्ति से जीविका ग्रहण करना, प्राण-भिक्षा माँगनेवाले कायरों तथा चोट खाकर गिरे हुए प्रतिद्वन्द्वी पर शस्त्र न उठाना, सताये निर्बलों को सहायता देना और प्रत्येक क्षण प्राणों को हथेली पर लिये घूमना, उसका बाना था। उन्हें लोग काशी में गुंडा कहते थे।

(ग) यह दम्भ तुम्हारा प्राचीन संस्कार है। क्यों राजन् क्या दास-दासी मनुष्य नहीं है? क्या कई पीढ़ी ऊपर तक तुम प्रमाण दे सकते हो कि सभी राजकुमारियों की ही सन्तान इस सिहासन पर बैठी है या प्रतिज्ञा करोगे कि कई पीढ़ी आने वाली तक दासी पुत्र इस पर न बैठने पावेगे? यह छोटे-बड़े का भेद क्या अभी इस संकीर्ण हृदय में इस तरह घुसा है कि निकल नहीं सकता? क्या जीवन की वर्तमान स्थिति देख कर प्राचीन अन्धविश्वासों का, जो न जाने किस कारण होते आए है, तुम बदलने के लिए प्रस्तुत नहीं हो? क्या इस क्षणिक भव में तुम अपनी स्वतन्त्र सत्ता अनन्त काल तक बनाए रखोगे? और भी, क्या उस आर्य पद्धति को तुम भूल गए कि पिता से पुत्र की गणना होती है? राजन, सावधान हो, इस अपनी सुयोग्य शक्ति को स्वयं कुंठित न बनाओ।

अथवा

बाह्य उपाधि से हटकर आन्तरहेतु की ओर कवि-कर्म प्रेरित हुआ। इस नये प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए जिन शब्दों की योजना हुई, हिन्दी में पहले वे कम समझे जाते थे; किन्तु शब्दों में भिन्न प्रयोग से एक स्वतन्त्र अर्थ उत्पन्न करने की शक्ति

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 4521 **H**

Unique Paper Code : 2051002002

Name of the Paper : Jansanchar aur Rachnatmak Lekhan (Hindi B)

Name of the Course : **AEC : Common Prog. Group**

Semester : IV

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. रचनात्मक लेखन से आप क्या समझते हैं? (15)

अथवा

रचनात्मक लेखन में स्वानुभव की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

2. जनसंचार माध्यमों के लिए रचनात्मक लेखन क्यों आवश्यक है? विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'वर्तमान समय में जनसंचार माध्यम हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं' समीक्षा कीजिए।

3. प्रिंट माध्यम के लिए यात्रा वृतांत लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। (15)

अथवा

एक अच्छे साक्षात्कार कर्ता को क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए?

4. किसी नारी विमर्श आधारित टी.वी. धारावाहिक के लिए संवाद लिखिए। (15)

अथवा

'आज की राजनीति' विषय पर दो मित्रों के मध्य संवाद लिखिए।

(10,000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

आपका अनुक्रमांक.............

Sr. No. of Question Paper : 4520 **H**

Unique Paper Code : 2051002001

Name of the Paper : Vyavharik Hindi (Hindi A)

Name of the Course : **AEC : Common Prog. Group**

Semester : IV

समय : 2 घण्टे पूर्णांक : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
3. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

1. व्यावहारिक हिन्दी का परिचय देते हुए उसकी उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

बैंकों में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी की विशिष्टताओं को उद्घाटित कीजिए । (15)

P.T.O.

2. सम्पर्क-भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को रेखांकित कीजिए।

अथवा

सामान्य हिन्दी से तुलना करते हुए बम्बईया हिन्दी की कुछ विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए। (15)

3. मॉल में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी के कुछ विशिष्ट रूपों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

खाता-बंद करवाने के लिए बैंक-प्रबंधक को पत्र लिखिए तथा पत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली को रेखांकित कीजिए। (15)

4. कार्यालयी-हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता क्यों पड़ती है? विस्तार से बताइए।

अथवा

आईपीएल मैच के संदर्भ में किन्ही दो टीमों के बीच के मैच का आंखों देखा अनुभव लिखिए। (15)

(10,000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 4522A **H**

Unique Paper Code : 2051002003

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Takneek (Hindi-C)

Name of the Course : **Common Prog. Group : AEC-2 – Hindi B**

Semester : IV

समय : 2 घण्टे

पूर्णांक : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. ई-गवर्नेंस से क्या अभिप्राय है? हिंदी में इसकी भूमिका का विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।

अथवा

वर्तमान समय में कम्प्यूटर द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार किस प्रकार हो रहा है-समीक्षा कीजिए। (15)

P.T.O.

2. वे़ब डिजाइनिंग किसे कहते हैं? हिंदी भाषा और वेब डिजाइनिंग के अंत: संबंध पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी में यूनिकोड का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है- विस्तारपूर्वक बताईए। (15)

3. इंटरनेट पर उपलब्ध हिंदी पत्रिकाओं के महत्व का आकलन कीजिए।

अथवा

हिंदी में लिखने के लिए कौन-कौन सी प्रमुख वेबसाइट हैं-किसी एक वेबसाइट की भाषा का विवेचन कीजिए। (15)

4. कंप्यूटर पर हिंदी में स्ववृत्त की निर्माण प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

अथवा

मशीनी अनुवाद से सम्बंधित प्रमुख सॉफ्टवेयर का परिचय दीजिए। (15)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1672 **H**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक

Name of the Course : **B.A. (HONS.) HINDI - DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अलंकार की अवधारणा पर विचार करते हुए वक्रोक्ति अलंकार को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

काव्य में छंद की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए मात्रिक और वर्णिक छंदों का सामान्य परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. भारतीय काव्य चिंतन में वर्णित काव्य लक्षण विषय पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

खंडकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएँ लिखिए ।

3. शास्त्रवाद से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित लिखिए । (12)

अथवा

संरचनावाद और उत्तर-संरचनावाद की प्रमुख स्थापनाओं का वर्णन कीजिए ।

4. निबंध विधा के तत्त्वों का विवेचन कीजिए । (12)

अथवा

त्रासदी की परिभाषा बताते हुए त्रासदी सिद्धांत का विवेचन कीजिए ।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए । (9×3=27)

(क) मानववाद

(ख) अभिधा शब्द शक्ति

(ग) बिंब

(घ) कहानी

(ङ) विरेचन

(च) गीतिकाव्य

3. लखमीचंद कृत 'नल दमयन्ती' सांग की कथावस्तु का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'नल-दमयन्ती' सांग के आधार पर दमयन्ती की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (10)

4. भिखारी ठाकुर कृत 'बिदेसिया' की संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बिदेसिया' के प्रमुख पात्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (10)

5. 'राजयोगी भरथरी' माच के नाट्य-शिल्प का विवेचन कीजिए।

अथवा

'राजयोगी भरथरी' माच के आधार पर राजा भरथरी का चरित्र-चित्रण कीजिए। (10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक..........

Sr. No. of Question Paper : 1519 **H**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य (DSE) (CORE)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) परदेसी का सोचे मरलीं।
अन-पानी के स्वाद रुचत नइखें, कबहूँ पेट ना भरलीं।
मतलब मोर बिधाता जनिहन, प्रेम का फंदा में परलीं।
छठ, एतवार एको न छोड़लीं, बरत से काया के जरलीं।
कहत 'भिखारी' उपाय नइखे लउकत, कोटिन जतन क के हरलीं।

अथवा

पिया मोर, मति जा हो पुरुबवा।
पुरुब देस में टोना बेसी बा, पानी बहुत कमजोर। पिया मोर...
सुनत बानी आँख पानी देत बा, सारी भइल सरबोर। पिया मोर...
एक नाथ बिनु मन अनाथ रही, घुसी महल में चोर। पिया मोर...
कहत बिखारी हमारी ओर देख, कतिना करीं निहोर? पिया मोर...

(ख) रंग भर जाजम झटक बीछावां, चारी पल्ला खोल ।।टेक।।
सिद्धेश्वर हे सरण-चरण में, लिखे माच का बोल।
ग्यान की गादी ओर गलीचा, तकीया गोल मटोल।
तन का ताना मन का बाना, स्वांसा तार टटोल।
बृहम्म नाम की जाजम बूणी रंगी धरम रंग घोल।
मन पंछी जां बास करे हे, करके बचन ओर कोल।
इन जाजम पे बीरला बेठे, ग्यान तराजू तोल ।।

अथवा

भरतरी -
अरे पिंगला थारो सुन्दर रूप सरूप नैन भर निरखांवो ।।टेक।।
थारो मुख सूरज सों तेज, रंग केसर का वो
थारो रूप देख सरमाय चाँद अम्बर का वो।
पिंगला -
अजी पीतम तम हो सरद पुनम का चाँद में हां चाँदनी ।।टेक।।
तम जेसे गजराज; में हां गज गामनी
तम म्हारा भरतार, पियु मैं थाकी कामनी।

(ग) इस बणखण्ड में दीखै सै मनैं दिन में घोर अन्धेरा।
सारदूल के जंगल के राजा कितै पति मिल्या हो मेरा।
तेरे बिना ना मेरी दहशत भागै, पिया मेरे इस मौकै मत त्यागै।
मनैं पिता के घरपै देवत्यां आगे पल्ला पकड्या तेरा।
इस जीवते जी क्यूंकर भूलूँ जब उनकै आगै टैरा ।।1।।

अथवा

समझ ना सकते जगत के मन पै अज्ञान रूपी मल होग्या।
बेईमान मैं मग्न रहै सैं गांठ-गांठ मैं छल होग्या ।।टेक।।
भाई के धोरै मा जाया भाई चाहता बैठणा पास नहीं ।।
जै बीर न पति कमा कै ल्यादे तै पेट भरण की आस नहीं ।।
मात-पिता गुरु-शिष्य सुत नै कहैं मेरे चरण का दास नहीं ।।
मित्र बण कै दगा कमाज्यां नौकर का विश्वास नहीं ।।
जब तै गारत महाभारत मैं अठारा अक्षौहिणी दल होग्या ।।1।।

(10×3=30)

2. लोकनाट्य 'नौटंकी' के उद्भव और विकास को रेखांकित कीजिए।

अथवा

'अंकिया' लोकनाट्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परंपरा का उल्लेख कीजिए। (15)

3. भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'अपनी खबर' में निहित बेचन शर्मा उग्र के जीवन संघर्ष का वर्णन कीजिए।

4. सुभान खाँ के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। (15)

अथवा

"वैष्णन की फिसलन एक महत्त्वपूर्ण व्यंग्य है" कथन की समीक्षा कीजिए।

5. 'जातियों का अनूठापन' निबन्ध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'निराला की साहित्य साधना' में संकलित 'नये संघर्ष' का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(5000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 1411 H

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिन्दी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : B.A. (H) HINDI

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8+7=15)

(क) मजदूरी करने से हृदय पवित्र होता है; संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं। हाथ की मजदूरी ही से सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है। जापान में मैंने कन्याओं और स्त्रियों को ऐसी कलावती देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी जानकारी की बदौलत हजारों की कीमत का बना देती हैं, नाना प्रकार

P.T.O.

के प्राकृतिक पदार्थों और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती है। जापान निवासी कागज, लकड़ी और पत्थर की बड़ी अच्छी मूर्तियाँ बनाते हैं।

अथवा

मैंने तीन तरफ से हिंदू-मुस्लिम का संधान पाया है। एक मार्ग संत और विद्धज्जनों का रहा है। हिंदू और मुस्लिम जनता वस्तुत: उच्चतर अर्थ में एक ही धर्म का पालन करती है-इस विषय पर फारसी में कुछ पुस्तकें लिखी गई थीं। एक 'मज्म-अ-उलबहरन' दाराशिकोह की लिखी है। इसका अंग्रेजी में भाषान्ततर मैंने देखा है। पुस्तक में हिंदू-मुस्लिम धर्मों का सम्मिलन कराने का प्रयास है। हिंदी में भी ऐसी पुस्तकें लिखी गई हैं। ऐसी पुस्तकें भी बहुत हैं जिनमें कुरान और गीता तथा वेद और कुरान के भक्तिमय आवेग वाले पद्यों में भी समानता खोजी गई है। यह एक तरह का प्रयास है, परंतु मुझे इसमें सफलता मिलती नहीं दिखायी दी। वस्तुत: प्रत्येक हिंदू और प्रत्येक मुसलमान जानता है कि उच्चतर आध्यात्मिक क्षेत्र में कहीं मतद्धैष नहीं है।

(ख) समाज तथा सामाजिक व्यक्ति सापेक्ष शब्द है, कारण, सामाजिक प्राणी के विकास के लिए समाज का आविर्भाव हुआ है तथा समाज के विकास के लिए व्यक्ति को अधिकार एवं सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। नागरिक शब्द केवल अपने शब्दिक अर्थ में प्रयुक्त न होकर इतना व्यापक हो गया है कि उससे केवल नागर निवासी

का बोध न होकर न्याय और कानून-सम्बंधी अनेक अधिकार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त व्यक्ति का ज्ञान होता है। व्यक्ति सामूहिक विकास को दृष्टि में रखते हुए शासित भी होता है और शासन में हस्तक्षेप तथा परिवर्तन करने का अधिकरी भी।

अथवा

जिन कितने देवताओं की मनौती के बाद माँ ने मुझे याद किया था, उनमें एक हुसैन साहब भी थे। नौ साल की उम्र तक, जब तक जनेऊ नहीं हो गई थी, मुहर्रम के दिन मुसलमान बच्चों की तरह मुझे भी ताजिए को चारों ओर रंगीन छड़ी लेकर कूदना पड़ा है और गले में गडे पहनने पड़े हैं मुहर्रम उन दिनों मेरे लिए कितनी खुशी का दिन था। नए कपड़े पहनता, उछलता-कूदता, नए-नए चेहरे और तरह-तरह के खेल देखता-धूम-धक्कड़ में किस तरह चार पहर गुजर जाते! ठस मुहर्रम के पीछे जो रोमांचकारी, हृदय को पिघलाने वाली, करुण रस से भरी दर्दअंगेज घटना छिपी है, उन दिनों उसकी खबर भी कहाँ थी!

2. मेले का ऊँट, निबंध में नीहित व्यंग्य की सोदाहरण विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

मजदूरी और प्रेम निबन्ध का उद्देश्य लिखिए।

3. ओमप्रकाश बाल्मीकि की 'सलाम' कहानी के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

हरिराम मीणा के उपन्यास 'धूणी तपे तीर' की अन्तर्वस्तु का विवेचन कीजिए।

4. हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत' कविता के कथ्य का विवेचन कीजिए। (10)

अथवा

निर्मला पुतुल की कविता 'क्या तुम जानते हो' में चित्रित नारी-जीवन के यथार्थ को उजागर कीजिए।

5. तुलसीराम की 'मुर्दहिया' और श्योराज सिंह 'बेचैन' की 'मेरा बचपन मेरे कन्धों पर' रचनाओं में चित्रित बचपन के यथार्थ का तुलनात्मक विवेचन कीजिए। (10)

अथवा

प्रभा खेतान की रचना 'अन्या से अनन्या तक' में वर्णित स्त्री-संघर्ष पर प्रकाश डालिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : (8×7=15)

(i) 'मुर्दहिया' का महत्त्व

(ii) आदिवासियों की समस्याएँ

(iii) भारत में महिला-आन्दोलन

(iv) ज्योतिबा फुले

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 2027 **H**

Unique Paper Code : 62055636

Name of the Paper : **अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी साहित्य**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS-GE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (10×2=20)

(क) नाम मुसहरवा है, कवनउ सहरवा ना,

कैसे बीती जिनगी हमार।

जेठ दुपहरिया में सोढ़िया चिराई करीं,
बहै पसीनवाँ के धार।
बेंहगी में बाँधि लेइ चललीं लकड़िया,
आधे दाम माँगे दुतकार ।।

अथवा

घर-प्रेम और जाति से अलग
एक स्त्री को उसकी अपनी जमीन
के बारे में बता सकते हो तुम?
बता सकते हो सदियों से अपना घर तलाशती
एक बेचैन स्त्री को
उसके घर का पता?

(ख) अन्धविश्वासों की कड़ी में हमारे घर की एक भाभी दुलरिया जजो पहलवानी सीखनेवाले गोकुल भैया की पत्नी थीं, जो बबुरा घनहुवाँ गाँव के पासवाली चमरोंटी से ब्याह कर आई थीं, एक तरह के मनोरोग से पीड़ित हो गईं। उनका अक्सर पेट दर्द करता और वह तुरन्त ओझैती वाली भभूत माँगने लगतीं। उस समय पास के ही चतुरपुरा नाम के गाँव में एक दलित औरत ओझैती करती थी। उसे लोग 'चमैनिया' के नाम से पुकारने लगे थे। लगभग हर रोज ही वह भभूत लाने को कहतीं। भभूत यानी अगियारी से बनी राख लाने का काम मुझे ही सौंपा जाता था। वह चमैनिया

की भभूत खाते ही कहने लगती कि पेट दर्द बन्द हो गया। कुछ दिनों तक तो मैं चमैनिया से भभूत लाकर उन्हें देता रहा, किन्तु बाद में मुझे एक खुराफात सूझी। मैं घर से शाम के समय भभूत लेने निकलता और मुर्दहिया के पास नटिनिया की झोंपड़ी से राख लेकर एक पलाश के पत्ते में लपेटकर कुछ देर बाद घर वापस आ जाता। इस राख को भी खाकर वह कहती कि पेट-दर्द बन्द हो गया।

अथवा

मेरे साथ मेरा अकेलापन हमेशा रहा है, पर यह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ भी समझाता रहा है। मैंने अपने-आपको बचाया है, अपने मूल्यों को जीवन में संजोया। हाँ, टूटी हूँ, बार-बार टूटी परिवर्तित नहीं हो पाई। इस उम्र में भी मैं एक पूरी-की-पूरी साबुत औरत हूँ, जो जिन्दगी को झेल नहीं रही, बल्कि हँसते हुए ज़ी रही है, जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज है। दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जिसकी नर्म हथेलियाँ हर किसी को अपनी करीब खींच लेती हैं।

2. विभिन्न आदिवासी-आन्दोलनों के इतिहास पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

दलित-विमर्श और आदिवासी-विमर्श का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

ज़्P 18

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1362 **H**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : **हिंदी आलोचना**

Name of the Course : **BA (H) HINDI – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गदयांशों की सप्रसंग व्याख्या करें : (10×3)

(क) कर्म सौन्दर्य के जिस स्वरूप पर मुग्ध होना मनुष्य के लिए स्वाभाविक हैं और जिसका विधान कवि परंपरा बराबर करती चली

आ रही है, उसके प्रति उपेक्षा प्रकट करने और कर्म सोन्दर्य के एक दूसरे पक्ष में ही केवल प्रेम और भ्रातृत्व भाव के प्रदर्शन और आचरण में ही - काव्य का उत्कर्ष मानने का जो एक नया फैशन टालस्टाय के समय से चला है, वह एकदेशीय है. दीन और असहाय जनता को निरंतर पीड़ा पहुंचाते चले जाने वाले क्रूर आततायियों को उपदेश देने, उनसे दया की भिक्षा मांगने और प्रेम जताने तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करने में ही कर्त्तव्य की सीमा नहीं मानी जा सकती, कर्म क्षेत्र का एक मात्र सौन्दर्य नहीं कहा जा सकता. मनुष्य के शरीर के जैसे दक्षिण और वाम दो पक्ष हैं, वैसे ही उसके हृदय के भी कोमल और कठोर, मधुर और तीक्ष्ण, दो पक्ष हैं और बराबर रहेंगे। काव्य कला की पूरी रमणीयता इन दोनों पक्षों के समन्वय के बीच मंगल या सौन्दर्य के विकास में दिखाई पड़ती है।

अथवा

में और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निसंदेह कला का उद्देश्य सौन्दर्य-वृति की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनंद की कुंजी है; पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनंद नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो। आनंद स्वतः एक उपयोगिता-युक्त वस्तु है और उपयोगिता की दृष्टि से एक ही वस्तु से हमें सुख भी होता है और दुःख भी. आसमान पर छाई लालिमा निसन्देह बड़ा सुन्दर दृश्य है; परन्तु आषाढ़ में अगर आकाश पर वैसी लालिमा छा जाये, तो वह हमें प्रसन्नता देने वाली नहीं हो सकती. इस समय तो हम आसमान पर काली--काली घटाएं देखकर ही आनंदित होते हैं।

(ख) सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमारी अनुभूतियों का क्षेत्र भी विकसित होता गया है और अनुभूतियों को व्यक्त करने के हमारे

उपकरण भी विकसित होते गए हैं। यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग नहीं बदले - प्रेम अब भी प्रेम है और घृणा अब भी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियों बदल गयी हैं; और कवि का क्षेत्र रागात्मक संबंधों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि-कर्म पर बहुत गहरा असर पड़ा है।

अथवा

अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता हैं। उस संघर्ष में अभ्व्यक्ति के स्तर तक आते-आते, हमारे मनोमय तत्व-रुप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान परंपरा और भाव परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द संयोग बने हुए हैं, उन

शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े हुए जो अर्थानुषंग हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगों को आत्मसात कर, मनोमय रूप तत्व अपने को और पुष्ट करते हैं.

(ग) साधारण, रोजमर्रा की घटनाओं के महीन सूत्रों द्वारा कुछ गंभीर सत्यों को उद्घाटित करना, उनके माध्यम से पात्रों की आकांक्षाओं और असंगतियों को अभिव्यक्त करना सचमुच एक कठिन समस्या है। हमेशा यह खतरा बना रहता है कि कहीं लेखक अपनी निरपेक्ष दृष्टि से च्युत होकर एक स्थूल, इतिवृतात्मक दृष्टिकोण न अपना ले.। यह केवल हवाई खतरा नहीं है. पिछले वर्षों में हिंदी उपन्यास का दुर्भाग्य ही यह रहा है कि लेखक अपने को सोशिलाजिस्ट पहले समझता है - कलाकार बाद में। फिर चाहे उपर्युक्त दृष्टिकोण प्रच्छन्न रूप में मनोवैज्ञानिक अंतर्दवंद्वों द्वारा प्रदर्शित हो (नदी के द्वीप) या सामाजिक विषमताओं के सम्बन्ध में लम्बी सैद्धांतिक बहसों के रूप में (बूंद और समुद्र, जयवर्धन)।

यह एक अजीब काम्प्लेक्स है जिससे न्यूनाधिक मात्रा में ह लेखक पीड़ित दिखाई पड़ता है।

अथवा

कहानी के भावात्मक स्तर से तात्पर्य बोध के स्तर से ही ह इसलिए इस बोध-स्तर पर थोड़े विस्तार में विचार करने की आवश्यकता ह। मैंने भावुकता का उपचार लेकर लिखी गयी कहानी और बोध-स्तर पर भावना का मर्म लेकर खुलने वाली कहानी में जो भेद किया है उसके कुछ निश्चित आधार हैं. सबसे पहला कारण कथानक के भावात्मक तत्वों के भेद के कारण सिद्ध होता ह। भावुक कहानी की कथा मानवीय संवेदना को कृत्रिम परिस्थितियों के योग से उभारने की चेष्टा करती है, फलत: उसमें वह प्रतीक ध्वनि नहीं होता जो पाठक की संवेदना के केंद्र में अपने को स्थिर कर दे। भावुक कहानियों में घटनाएँ -

और उन घटनाओं के प्रति पात्रों की तात्कालिक प्रतिक्रिया ही - कहानी का केन्द्रीय आधार बन जाती है।

2. शुक्ल पूर्व युग की हिंदी आलोचना पर एक निबंध लिखें। (15)

अथवा

द्विवेदी युगीन आलोचना की प्रमुख प्रवृतियों का वर्णन करें।

3. रामविलास शर्मा के आलोचनात्मक योगदान का मूल्यांकन करें। (15)

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना के महत्त्व का प्रतिपादन करें।

4. नामवर सिंह की आलोचना-शैली की विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

'सन्दर्भ की खोज' शीर्षक पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 2225 **H**

Unique Paper Code : 62057632

Name of the Paper : Sahityachintan

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi CBCS-DSE

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. साहित्य की प्रयोजनीयता पर विचार कीजिये । (15)

अथवा

साहित्य की समाजशास्त्रीय दृष्टि की विवेचना कीजिए ।

2. रस को परिभाषित करते हुए रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । (15)

अथवा

P.T.O.

रस की परिभाषा देते हुए रस के अंगों का परिचय दीजिए।

3. शब्दशक्ति से क्या अभिप्राय है ? शब्दशक्ति के रूप में व्यंजना शक्ति का विस्तृत विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

किन्हीं चार अलंकार का सोदाहरण परिचय दीजिए।

4. काव्य और लय के परस्पर सम्बन्ध को उद्घाटित कीजिए। (15)

अथवा

काव्य में छन्द के महत्त्व का निरूपण करते हुए मुक्त छन्द की परिकल्पना पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) बिंब

(ii) फैंटेसी

(iii) साहित्य और समाज का अंर्त संबंध

(iv) वीर रस

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक ....

Sr. No. of Question Paper : 2138 **H**

Unique Paper Code : 62057632

Name of the Paper : Sahityachintan

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi CBCS-DSE

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. "साहित्य जीवन की आलोचना है"-इस कथन की समीक्षा कीजिए । (15)

अथवा

साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं, स्पष्ट कीजिए ।

2. श्रृंगार रस की परिभाषा देते हुए इसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए । (15)

P.T.O.

अथवा

रस के विभिन्न अंगों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. अभिधा शब्द शक्ति से क्या अभिप्राय है? तथा शब्द शक्ति के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

साहित्य में बिम्ब और प्रतीक के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

4. छन्द की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

काव्य में लयात्मकता के महत्त्व का निरूपण करते हुए उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए। (8,7)

(i) लक्षणा शब्द - शक्ति

(ii) साहित्य में मनोवैज्ञानिक दृष्टि

(iii) लय और तुक का महत्त्व

(iv) रस के भेद

11

[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.............

Sr. No. of Question Paper : 5113 H

Unique Paper Code : 2052102401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra

Name of the Course : B.A. (H) Hindi – DSC

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए आचार्य वामन के योगदान को लिखिए। (15)

अथवा

भारतीय काव्यशास्त्र में औचित्य संप्रदाय का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. काव्य हेतु किसे कहते है? संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य हेतुओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

P.T.O.

काव्य लक्षण क्या हैं? काव्य लक्षणों को उदाहरण सहित समझाइये।

3. रस को परिभाषित करते हुए वीर और शांत रस को उदाहरण सहित समझाइये। (15)

अथवा

विभिन्न विद्वानों के मतों को विश्लेषित करते हुए रस निष्पत्ति की अवधारणा को समझाइये।

4. व्यंजना शब्दशक्ति को उदाहरण सहित समझाइये। (15)

अथवा

शब्द अलंकार और अर्थ अलंकार के भेद को उदाहरण सहित समझाइये।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (10×3=30)

(क) सवैया और छप्पय छंद

(ख) रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) काव्य प्रयोजन

(घ) वीभत्स रस

(ङ) लक्षणा शब्द शक्ति

(च) पंडितराज जगन्नाथ